❀ ॐ ❀

प्रणव कल्प–भूमिका

प्रणव की महिमा शास्त्रों में विस्तार से वर्णित है। उसकी उपासना करने से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है। यदि उसके अर्थ का यथार्थ बोध हो जाय तो संसार बन्धन मुक्त होकर जीव परम पद को प्राप्त कर लेता है। उसकी ...पना सगुण निर्गुण रूप भेद से दो प्रकार की होती है। ...ण उपासना में एक तो प्रणव के अक्षरों का ही ध्यान किया ...ा है। दूसरे उसके सगुण शब्द अर्थ का ध्यान किया ...ता है। जिसका जो इष्ट हो वह उसी का ध्यान कर सकता ... क्योंकि सगुण का स्वरूप अनेक प्रकार का है। वह ...ार सगुण ही अनेक प्रकार का है। एक निराकार सगुण ... है वह एक ही प्रकार का है। निराकार निर्गुण तो एक ...है। इसको सभी लोग जानते हैं किन्तु उसकी उपासना ...न है। इस प्रणव कल्प में निर्गुण उपासना का वर्णन ... इसमें सगुण उपासना के समान कवच रहस्य पञ्जर आदि ... का वर्णन किया गया है। इसकी उपासना के अधिकारी ... सन्यासी हैं। यद्यपि मन्त्रों के साथ यज्ञोपवीत संस्कार ...त द्विजाति मात्र का अधिकार है। यज्ञोपवीत से रहित ...ण क्षत्रिय, वैश्य भी प्रणव जपने के अधिकारी नहीं हैं। ...कल कुछ लोग अपने को पंडित मानने वाले मनुष्य मात्र ...प्रणव जपने का उपदेश करते हैं ... नहीं है।

नृसिंह पूर्व तापनी उपनिषद में स्पष्ट उल्लेख कि—

"सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्री शूद्रायनेच्छन्ति द्वात्रिंशदक्षरं साम जानी याद्यो जानीते सोऽमृतत्व च गच्छति। सावित्री लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यद्विजानीयात् स्त्री शूद्रः ममृतो अधो गच्छति तस्मात्सर्वदाता चष्टे यद्याचष्टे स आचार्य तेनैव समृतोऽधो गच्छति नृ० पू० ता० ३ ॥"

इसमें स्त्री शूद्र को सावित्री प्रणव, यजु लक्ष्मी का जानना भी निषिद्ध है। यदि जानता है तो मरने के अनन्तर उसका अधः पतन होता है और उपदेश दाता आचार्य का भी वही हाल होता है। इस प्रणव कल्प में शिव और पार्वती का सम्वाद है। पार्वती जी ने प्रश्न किया है शिव जी ने उत्तर दिया है। शंकर जी ने पार्वती से कहा है कि—

अज्ञाननाशन द्वारा प्रणवो मोक्ष दायकः। नतत्रयोग्यता तेऽस्तियतो नारी भवस्य हो॥ गायत्र्यां द्विज सन्धानां यतीनां प्रणवेरतिः। नारीणां भर्तृशुश्रूषा न जपो न तपो व्रतम्॥

इससे शंकर जी ने स्त्री को प्रणव जप में अनधिकारिणी कहा है। तब पार्वती जी ने कहा—

क्लीवश्च पुरुषोयोषा चरं चाचर मेव च। सर्वं ब्रह्म न तद्भिन्नमद्वैतं परमार्थतः॥ इससे सबको प्रणव जप का अधिकार होना चाहिये। तब भी शंकरजी का यह वाक्य कि—

कर्मणा मनसा वाचा येत्यजन्ति यतीश्वरः।

गायत्री मथ सावित्रीं तेषां प्रणव योग्यता ॥

इससे सन्यासी को ही प्रणव जाप सिद्ध होता है। इसी प्रणव कल्प में शंकर जी ने कहा है कि—

यतिर्गायत्री जपिता वह्वादि तार जापकः।
मन्त्र जाप्यश्च नार्यश्च सर्वे निरय गामिनः॥

इसमें केवल सन्यासी के लिए ही प्रणव जप के लिए कहा है। ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वनस्थ तीनों को केवल प्रणव जपने से 'नर्कगामी' ही कहा है। और स्त्री को गायत्री मन्त्र जपने से 'नर्क गामिनी' कहा है। और सन्यासी को भी गायत्री का जप करने से 'नर्क गामी' कहा है। अतएव जिसके लिए शास्त्र में जैसा उपदेश है उसको वैसा करना चाहिये। यदि कहा जाय कि तब शङ्कर जी ने पार्वती जी को प्रणव कल्प का उपदेश क्यों किया तो वे देवता हैं। देवताओं के लिए विचार नहीं होता पर मनुष्यों के लिए शास्त्र के विधि निषेध हैं। इस पर बहुत लिखा जा सकता है किन्तु विस्तार भय से नहीं लिखा है बुद्धिमानों को इतने में ही समझना चाहिये। यह प्रणव कल्प स्कन्द पुराण के अन्तरगत है। इस पर श्री मत्परमहंस विद्वद्वर श्री गंगाधरेन्द्र सरस्वती नाम भिक्षु से निर्मित संस्कृत में ही प्रणव कल्प प्रकाश नाम का भाष्य है। जिससे संस्कृत भाषा के ज्ञाता सन्यासी लोगों को लाभ हो सकता है। वर्तमान समय में सब सन्यासी संस्कृत के ज्ञाता नहीं हैं। अतएव उनको भी इससे लाभ हो इस

विचार से श्री स्वामी चन्द्रचूड़ाश्रम जी ने हमको हिन्दी में अनुवाद करने के लिए आग्रह किया। श्री भगवान की कृपा से इसका हिन्दी मे अनुवाद हमने पूरा कर दिया। यद्यपि अनुवाद सरल करने का प्रयत्न किया है। तथापि कहीं कठिन भी है क्योंकि पारिभाषिक शब्दों को वैसे ही रखना पड़ा है। अतएव सन्त जन जिस शब्द को कठिन समझें उसका अर्थ किसी योग्य संस्कृत ज्ञाता से समझने का प्रयत्न करें। यदि इसके पढ़ने से सन्यासी महात्माओं को लाभ होगा तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। अनुवाद इसके भाषा के आधार पर किया है उसमें अच्छाई उसी भाष्य की है। जो दोष है वह मेरा है।

रामदेव रमणरेती

श्री वृन्दावन

चै० शु० २ बुधवार सं० २०२१ वि०

—

* श्रीगणेशाय नमः *

प्रणव कल्प :—

* प्रकाशकीय वक्तव्य *

'प्रणव' ॐ के बारे में भगवान नंदनन्दन श्रीमद्भगवद्-गीता में 'प्रणव : सर्ववेदेषु' मैं सर्व वेदों में प्रणव हूँ यह बतलाते हैं। इसे ही एकाक्षर ब्रह्म कहा जाता है श्री गीता में ही ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहृतं मामनुस्मान् यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥ ॐ इस एकाक्षर ब्रह्म का जप करते हुए मेरा स्मरण करने वाला देह छोड़कर मोक्ष प्राप्त करता है।

योग दर्शनकार महर्षि पतञ्जलि :- "तस्य वाचकः प्रणवः" परमात्मा का वाचक प्रणव (ॐ) है तज्जयस्तदर्थ भावनम्' प्रणव जप के समय उसके अर्थ - परमात्मा - की भावना करना चाहिए महर्षि ने इन सूत्रों को उपनिषद् से उद्धृत किया है। अब जरा उपनिषद् की ओर भी आप दृष्टिपात करें :— समस्त माण्डूक्य उपनिषद् में प्रणव का ही व्याख्यान है, प्रश्नोपनिषद्, कठ, इत्यादि सर्वत्र प्रणव का उपव्याख्यान उपलब्ध है।

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ मुण्डको० २।२।४

प्रणव धनुष, बाण आत्मा और ब्रह्म उसका लक्ष्य कहा

गया है, समाहित होकर वेधने के लिए बाण के समान तन्मय होना चाहिए।

सर्वे वेदा यत्पद मामनंति तपाँसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्। कठ०

सर्व वेदान्त जिस ब्रह्म का प्रतिपादन करते हैं और सभी तप (कर्म) चित्त शुद्धि द्वारा प्राप्त करते हैं। जिस ब्रह्म प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य व्रत पालन करके प्राप्त करते हैं वह हम संक्षेप में बतलाते हैं कि 'ॐ' है।

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म एतद्ध्येवाक्षरं परम्।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्यतत्॥

यही अक्षर अपर ब्रह्म (हिरण्यगर्भ) और यही परब्रह्म है इस अक्षर ब्रह्म को जानकर परब्रह्म रूप में उपासना करके जो चाहे उसे प्राप्त हो जाता है।

एतदालम्बनँ श्रेष्ठमेतदालम्बनम्परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते॥

यह प्रणव ब्रह्म प्राप्ति का श्रेष्ठ और परम आलंबन है इसे जानकर ब्रह्मलोक में महिमा पाता है।

प्रणव का चिंतन मनन और जप अन्तःकरण की शुद्धि योग सिद्धि तथा जीवनमुक्ति की प्रसिद्धि का अनैकांतिक साधन है। उपनिषदों में अन्यत्र भी :—

यस्तु द्वादश साहस्रं जपेद् प्रणवतंद्रितः।
तस्य द्वादशभिर्मासै परब्रह्म प्रकाशते॥

जो एकाग्र होकर आसन प्राणायाम पूर्वक बारह हजार प्रणव का नित्य जप करता है उसे एक वर्ष में ब्रह्म साक्षात्कार कर लेता है। संभवतः कोई मंत्र ऐसा न मिलेगा जो प्रणव द्वारा सम्पुटित न हो। वेदान्त का अनुशीलन करने वालों के लिए भी प्रणव जप का विधान है। पौराणिक ग्रन्थों में भी इसका विशद वर्णन है प्रणवकल्प में प्रणव चिंतन की विधियों का वर्णन करना अप्रासंगिक न होगा - तद्यथा :—

ॐ चिन्तयेत् प्रणवात्मानं आत्मज्योतिः सनातनम्।
चैतन्यमात्र ममृतं सोहमस्मीति भावयेत्॥
कार्यो पाधिरयं जीवः कारणो पाधि रीश्वरः।
कार्यं कारणतां हित्वा पूर्ण बोधो वशिष्यते॥
अच्युतोहम नतोहं गोविन्दोह महं हरिः।
आनन्दोहम शेषोहम जोहं मृतोऽस्म्यहम्॥
नित्योहं निर्विकल्पोहं निराकारो हमीश्वरः।
सच्चिदानन्दरूपोहं परिपूर्णोऽस्मि सर्वदा॥
अकर्ताहम भोक्ताहं असंग परमेश्वरः।
सदा मत्सन्निधानेन चेष्टते सर्वमिन्द्रियम्॥
ब्रह्मैवाहं न संसारी मुक्तोऽहमिति भावयेत्।
अशक्नुवन्भावयितुं वाचमेतत्सदाभ्यसेत्॥
ध्यानयोगेन मासाच्च ब्रह्म हत्यां व्यपोहति।
संवत्सर सदाभ्यासात् सिद्धमष्टक मवाप्नुयात्॥
यावज्जीव सदाभ्यासाज्जीवन्मुक्तत्व जायते॥

आत्मज्योति-स्वप्रकाश प्रणवात्मा - ॐ - का चिंतन

करे जो चैतन्यमात्र और अमृत है "वही मैं हूँ" वही मैं ब्रह्म हूँ कार्य जीव की उपाधि और कारण ईश्वर की उपाधियां दूर कर देने पर पूर्ण बोधस्वरूप (परब्रह्म) ही शेष रहता है।

मैं ही अच्युत, अनंत, गोविन्द और हरिः हूँ। मैं ही आनन्द अशेष अज और अमृत हूँ, मैं नित्य, निर्विकल्प, निराकार ईश्वर हूँ, (परब्रह्म हूँ) मैं सच्चिदानन्द रूप और सर्वदा परिपूर्ण हूँ. हम अकर्त्ता, अभोक्ता तथा हमी असंग परमेश्वर हैं, हमारे ही सन्निधान से सब इन्द्रियां चेष्टा करती हैं (बिना मेरी आज्ञा मेरी इन्द्रियां उत्पथगामिनी नहीं होसकतीं) मैं ब्रह्म हूँ, संसारी नहीं हूँ नित्ययुक्त हूँ, ऐसी भावना करे (यदि साधन चतुष्टय सम्पन्न होकर आचार्य द्वारा वेदान्त श्रवण यथेष्ट न किया होतो) इन उपरोक्त वाक्योंका सदा अभ्यास करे। ध्यान याग द्वारा (अर्थात मैं ही ब्रह्म हूँ) एक महीने में ब्रह्महत्या जैसे पाप दूर होते हैं - एक वर्ष के अभ्यास से अणिमादि अष्ट सिद्धियों की प्राप्ति होती है और यावज्जीवन अभ्यास करने से जीवन्मुक्ति की प्राप्ति होती है।

गृहस्थ साधकों के लिए गायत्री मन्त्र या अन्य किसी मन्त्र में सम्पुटित प्रणव का जप और चिंतन करना चाहिए।

(देखिए मनुस्मृति अ० २)

यतिः लोगों के लिए 'यति संध्या' में जप और ध्यान के प्रकार बतलाए गये हैं - वही देखकर या उपनिषदों द्वारा प्रणवोपासना का रहस्य जानकर तदनुसार ध्यान करना चाहिए।

"ध्याने नैकाग्रमापन्ने चित्ते विद्याः स्थिरी भवेत् ।"

(पञ्चदशी)

ध्यान द्वारा एकाग्रता होने पर चित्त में विद्या (ब्रह्म और आत्मा की एकता का ज्ञान) स्थिर होजाता है ।

स्कन्द महापुराण में इस प्रणव के निरूपण के प्रसंग के लिए-"प्रणव कल्प" कहा गया है उसकी मूल और संस्कृत भाष्य सहित हमें दो प्रतियाँ उपलब्ध हुई । इनमें प्रणवोपासना की समग्र सरल विधियाँ संग्रहीत हुई हैं। इसमें कवच, हृदय, वज्रपंजर, माला मन्त्र, स्तवराज, अक्षर मालिका मन्त्र, अनुस्मृति, गीता, अष्टोत्तर शत नाम, षोड़श नाम और सहस्र नाम आदि का संकलन है इसके रचयिता श्री वेदव्यास जी हैं। सर्व साधारण को इसका अर्थ विदित हो जाये। अतः अनेक ग्रन्थों के रचयिता वीतराग तथा जीवन्मुक्त अनन्त श्री विभूषित स्वामी रामदेव जी से इसकी टीका कराकर इसे प्रकाशित कर रहे हैं। मेरा वास्तविक मतव्य तो इसे जनता के लिए सरल और सुलभ करने का है परन्तु फिर भी हो सकता है कि कहीं पर किसी प्रकार की कोई एषणा भी छिपी हो उसे सर्वज्ञ प्रणवात्मा ही जानते होंगे।

यह संस्करण हमारी रुचि के अनुरूप नहीं बन सका तथापि अधिक समय व्यतीत होने के कारण हम इसे पाण्डु लिपि के रूप में ही प्रकाशित कर रहे हैं।

जिन लोगों ने अपने पवित्र द्रव्य द्वारा मुद्रणालय में भेजकर अक्षरों द्वारा इसे सुरक्षित किया उनका हृदय सुरक्षित

और अक्षत हो।

स्वामी चन्द्रचूड़ाश्रम

दण्डत्यक्त

स्थान व पोस्ट कुम्हरौर

जि० फर्रुखाबाद।



ॐ

मृगाङ्क-कल्पः

❀ श्री गणाधि पतये नमः ❀

सत्रान्ते नैमिषारण्ये शौनकस्य महीयसः ।
आसीनं मुनि शार्दूलं सूतं पौराणि कोत्तमम् ॥ (१)

श्री नैमिषारण्य में कुलपति शौनक के सत्र समाप्त होने पर मुनि शार्दूल पौराणिकों में श्रेष्ठ बैठे हुए सूत को ।

समागत्य परीवृत्य शौनकाद्या महर्षयः ।
यथेष्टाः सत्कथाः पुण्याः पर्यपृच्छन् मुमुक्षया ॥ (२)

महर्षि शौनक आदि आकर चारों ओर से घेर कर मुक्ति की इच्छा से यथेष्ट कथा पूछा ।

मन्त्रान्प्रसञ्जयंस्तत्र शौनकः प्रत्य भाषत ।
सूत सूत महाप्राज्ञ व्यास शिष्य महामते ॥ (३)

उन प्रश्न करने वाले मुनियों के मध्य सबके अभिप्राय को जानने वाले शौनक मुनि बोले हे महामति-महा प्राज्ञ व्यास शिष्य सूत ।

श्रुताः पुराण संसिद्धाः मन्त्र गोप्याश्च तत्कथा ।
कृष्ण द्वैपायनाद्विष्णो स्तत्कटाक्षस्त्वयि प्रभो ॥ (४)

हे प्रभु तुम्हारे ऊपर विष्णु के अवतार कृष्णद्वैपायन की कृपा कटाक्ष फैली है इस कारण तुमने मन्त्र के समान

गोपनीय पुराणों से संसिद्ध इन कथाओं को सुना है।

अज्ञातं तव नास्त्येव तस्मात्पौराणि कोत्तम् ।
सप्त कोटि महामन्त्राःसाङ्गो पाङ्गाजयन्ति वै ॥ (५)

हे पौराणिकोत्तम! जिस कारण से तुमको कुछ भी अज्ञात नहीं है। अङ्ग औ उपाङ्ग के सहित सप्तकोटि महामन्त्र जप करने वाले को सभी प्रकार के फल देते हैं।

अपवर्गप्रदः को वा तत्र नो वद भूसराः ।
यज्जपान्मुच्यते जन्तुर्जन्म संसार बन्धनात् (६)

इन मन्त्रों में कौन मन्त्र अधिकारी ब्राह्मणों को मुक्ति देने वाले हैं। और जिनके जपने से जीव संसार बन्धन से मुक्त हो जाता है।

इत्युक्तो मुनिभिः सूतः प्रोवाच मुनिसत्तमान ।
भो भो हेमुनयः श्रेष्ठाः साधु पृष्टं महात्मभिः ॥ (७)

इस प्रकार मुनियों से पूछे जाने पर सूत जी सर्वश्रेष्ठ मुनियों से बोले, कि हे पूजनीय श्रेष्ठ मुनि आप महात्मा लोगों ने अच्छा प्रश्न किया है।

संसार सार बुद्धीनां मोक्षेच्छा भवतिध्रुवम् ।
शार्दूलपशु जाती नामश्रमप्रान्त वर्तिनाम् ॥ (८)

संसार के सार और असार को जानने वाली बुद्धि वाले तथा जिनके आश्रम के समीप स्वाभाविक वैर करने वाले सिंह गो आदि पशु बैर परित्याग करके विचरते हैं।

नास्तिवैरं कुतोबोऽस्ति ततो वक्ष्यामि वाञ्छितम् ।
अपवर्गप्रदो नूनं प्रणवान्न परोमनुः ॥ (९)

जब आपके आश्रम के समीप रहने वाले वैर नहीं करते, तब आप लोगों में कैसे रह सकता है। अतएव आपके इच्छित को मैं कहूँगा। प्रणव से बढ़कर कोई भी मन्त्र मुक्ति देने वाला नहीं है।

ततोयूयं तमेवेत्थं मन्त्र जपत सत्तमाः ।
नृसिंह मन्त्र राजाद्या स्तारतम्य फल प्रदाः ॥ (१०)

हे सब उत्तम मुनि आप लोग इस प्रकार प्रणव मन्त्र का जप करें। नृसिंह मन्त्र राजादि तारतम्य फल देने वाले हैं। अर्थात सकामों को कामना के अनुसार फल देते हैं, निष्कामों को क्रम से मुक्ति फल देने वाले हैं।

तस्माज्जपत तंयूयं साङ्गं मनु मनुत्तमम् ।
अत्रै वोदा हरन्तीममितिहासं पुरातनम् ॥ (११)

तिस कारण आप लोग सब से उत्तम इस मन्त्र का जप करें। इस विषयमें यह पुराना इतिहास सुना था जाता है।

पुरागौर्या महादेवः पृष्टो व्याचष्ट भूसुराः ।
कदाचिदीश्वरः शम्भुस्तपस्तेपे हिमाचले ॥ (१२)

पूर्वकाल में गौरी के पूछने पर शंकर जी ने सब बात कही है। हे ब्राह्मणों उसको सुनो, किसी समय शंकर जी ने हिमांचल पर्वत पर तप किया।

पार्वती कन्यका भूत्वा देवं शुश्रुषया सदा ।
तोषयामास तान्देवस्तुष्टः प्रोवाचसस्मितम् ॥ (१२)

पार्वती कन्या होकर सदा सेवा के द्वारा शंकर जी को सन्तुष्ट किया । सन्तुष्ट होकर शंकर जी मुस्कराते हुए पार्वती जी से बोले ।

वरं वृणीष्व हे गौरि ! प्रीतोस्मि तव सेवया ।
नासाध्यं विद्यते मेऽत्र धन धान्य गृहादिषु ॥ (१४)

हे गौरी ! तुम्हारी सेवा से मैं प्रसन्न हूँ । वर माँग लो धन धान्य गृहादि में मुझको कुछ भी असाध्य नहीं है ।

इत्युक्ता वचनं प्राह मेघ गम्भीरया गिरा ।
भवंत्यजामियेनाहं मोक्षीं ब्रह्माप्ति लक्षणम् ॥ (१५)

इस प्रकार शङ्कर जी के कहने पर मेघ के समान गम्भीर वाणी से पार्वती बोलीं । जिससे मैं संसार को त्याग दूँ और ब्रह्म की प्राप्ति रूप मुक्ति ।

प्राप्नुयां तमिमं देव ! मन्त्र मुह्यमुपादिश ।
आह पृष्टस्तया देवो मैवं वद शुभेक्षणे ॥ (१६)

प्राप्त करूँ । हे देव ! उस मन्त्र को हमारे लिए उपदेश कीजिये । पार्वती जी के पूछने पर शङ्कर जी बोले, हे शुभ नेत्र वाली ऐसा न कहो ।

अज्ञान नाशन द्वारा प्रणवो मोक्षदायकः ।
न तत्र योग्यता तेस्ति यतो नारी भवस्य हो ॥ (१७)

अज्ञान के नाश द्वारा मोक्षदायक प्रणव है। इस प्रणव के जप में तुम्हारी योग्यता नहीं है। क्योंकि तुम स्त्री हो।

गायत्र्यां द्विज संघानां यतीनां प्रणवेरतिः।
नारीणांभर्तृ शुश्रूषा न जपो न तपो व्रतम् ॥ (१८)

गायत्री में द्विजातियों के समूह को अधिकार है। सन्यासी लोगों का प्रणव जप में अधिकार है। स्त्री का पति सेवा में अधिकार है। उसके लिये जप तप व्रत नहीं है।

ततोवरय राज्यादि प्राप्तिं यद्यस्तिते मनः।
कर्मणा मनसा वाचा ये त्यजन्ति यतीश्वराः ॥ (१९)

यदि तुम्हारे मन में इच्छा हो तो राज्यादि की प्राप्ति माँग लो। कर्म, मन, वाणी से जिन सन्यासियों ने सब वैदिक कर्म का परित्याग कर दिया है तथा गायत्री अथवा सावित्री का त्याग कर दिया है। उन्हीं का प्रणव जप में अधिकार है।

गायत्री मथ सावित्रीं तेषां प्रणव योग्यता।
आह पृष्टैव मीशानं मैव भाषस्व शंकर ॥ (२०)

इस प्रकार शङ्कर से पूंछ कर पार्वती जी बोलीं, हे शङ्कर ऐसा न कहो।

क्लीवश्च पुरुषो योषा चरं चाचर मेव च।
सर्वं ब्रह्म न तद्भिन्नमद्वैतं परमार्थतः ॥ (२१)

नपुंसक स्त्री पुरुष सभी ब्रह्म हैं। ब्रह्म से भिन्न कुछ भी नहीं है। अतएव परमार्थ में अद्वैत है।

चतुष्टयं साधनाख्यं यत्र तत्रैव योग्यता।
ततो वद मया पृष्टं तारकं भव तारकम् ॥ (२२)

क्योंकि विवेक, वैराग्य, शमदमादि षट सम्पति मुमुक्षुता ये चार साधन जिसमें हों वही अधिकारी है। अतएव हमारे पूछे हुए प्रश्न का उत्तर संसार को तारने वाला तारक (मन्त्र) प्रणव का उपदेश दीजिये।

तारकं रूपमास्थाय ब्रह्म प्राप्नोत्य संशयम्।
तुतोष वचनं श्रुत्वा वाक्यं प्रोवाच शंकरः ॥ (२३)

क्यों तारक रूप प्रणव की उपासना करने से जब अन्तःकरण शुद्ध हो जायगा तब साक्षात पर ब्रह्म का ज्ञान हो जायगा। श्री शङ्कर जी पार्वती की बात सुनकर सन्तुष्ट हुए और बोले।

कृतार्थासि कृतार्थासि मुमुक्षा यत्तवाऽस्ति भो।
इत्युक्त्वोपदि देशैनां तारकं भव तारकं ॥ (२४)

हे पार्वती जी तुम कृतार्थ हो कृतार्थ हो क्योंकि तुमको मुक्ति की इच्छा है। इस प्रकार कहकर पार्वती जी को ससार से तारने वाला तारक मन्त्र प्रणव का उपदेश दिया।

अङ्गन्यपि तथा तस्यै भाषते परमेश्वरः।
प्रथमं कवचं दिव्यं पञ्जरं तदन्तरं ॥ (२५)

तैसे ही शङ्कर जी ने पार्वती जी के लिए प्रणव के अङ्गों का भी कथन किया पहिले दिव्य कवच उसके पश्चात पञ्जर।

हृदयं प्रणवार्थाख्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम ।
अङ्गस्तुतिं तथा मन्त्रं पुरुश्चरण पद्धतिम् ॥ (२६)

प्रणव के अर्थ को कहने वाला हृदय, अष्टोत्तर शत, नाम, अङ्ग स्तुति, मन्त्र, पुरश्चरण पद्धति ।

अङ्गन्यासं करन्यासं महात्म्यं तदपेक्षितम् ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानां प्रणवस्य शुचिस्मते ॥ (२७)

अङ्ग न्यासं, करन्यासं, मन्त्र मात्र से अपेक्षित, माहात्म्यं प्रणव के दिव्य सहस्र नाम, हे शुचि स्थिति ।

स्तव राजादि सर्वाणि माला मन्त्र मनुस्मृतिः ।
मन्त्र मात्रस्य सर्व स्याप्येतान्यङ्गानि पार्वति ॥ (२८)

सभी स्तव राज आदि माला, मन्त्र, अनुस्मृति, हे पार्वती जी सभी मन्त्र मात्र के इतने अङ्ग हैं ।

अङ्ग हीनो मनुर्जप्तो भस्माहुति समो भवेत् ।
ॐकार जजपूकानां जप्यान्यङ्गानि दण्डिनाम् ॥ (२९)

अङ्ग से रहित जपा हुआ मन्त्र भस्म में आहुति के समान निष्फल होता है। ओंकार को बार बार जपने वाले एक दण्डी के लिए भी ।

इत्येवं सकलै रंगैः पार्वत्या उपदिष्टवान ।
जजाप च महादेवी मोक्षाय कमलेक्षणा ॥ (३०)

इस प्रकार सम्पूर्ण अङ्ग के सहित प्रणव का उपदेश पार्वती जी के लिये किया । कमल नयनों महादेव जी ने मुक्ति

के लिए उसका जप किया।

आचरन्तु भवन्तोऽपि लभन्ता मोक्ष मुत्तमम् ।
तथोपदिश सूत ! त्वंयथेशो रोम हर्षण ॥ (३१)

आप लोग भी साङ्ग प्रणव की उपासना कीजिये और उत्तम मोक्ष को प्राप्त कीजिये। हे रोम हर्षण सूत ! जिस प्रकार शङ्कर जी ने सब अङ्गों के सहित पार्वती जी को प्रणव का उपदेश दिया वैसा ही उपदेश कीजिये।

अङ्गानि सकलान्येवं मन्त्र मोंकार रूपिणम् ।
अङ्गानां च विशुद्धयर्थमङ्ग स्तुति महं ब्रुवे ॥ (३२)

सूत जी बोले अङ्गों की विशुद्धि के लिए प्रथम अङ्गों की स्तुति करता हूँ।

मस्तक ! त्वं दैवतानि नभ प्रणव रूपिणिम् ।
युवां च शृणुतं श्रोत्रे ! प्रणवार्थं च नान्यथा ॥ (३३)

हे मस्तक तुम प्रथक दृष्टि में इस कोटि देवता और एकत्व दृष्टि में एक ईश्वर रूप प्रणव को नमन करो। हे श्रोत्र तुम प्रणव के अर्थ को सुनो।

युवां च पश्यतं नेत्रे ! प्रणवार्थं विलेखनम् ।
युवां च वहतं हस्तौ ! प्रणवार्थस्य पुस्तकम् ॥ (३४)

हे नेत्र तुम प्रणव के अर्थ लिखी पुस्तक को देखो। हे हस्त तुम प्रणवार्थ लिखी पुस्तक उठाकर ले चलो।

युवां च गच्छतं पादौ ! बोधको यत्र तस्यवै ।

मनो ! मनुष्य भद्रन्ते प्रणवार्थं शुभ प्रदम् ॥ (३५)

हे पाद जहाँ प्रणव के अर्थ का बोधक हो वहाँ चलो। हे मन तुम्हारा कल्याण हो। तुम कल्याण देने वाले प्रणव का मनन करो।

बुद्धे ! निश्चय तस्माच नान्यद स्तीति चित्तक।
चिन्तयोंकार तात्पर्यं भेद बुद्धि निरासकम् ॥ (३६)

हे बुद्धि तुम ! प्रणव से अन्य कुछ नहीं है ऐसा निश्चय करो। हे चित्त तुम ! भेद बुद्धि को दूर करने प्रणव के तात्पर्य का चिन्तन करो।

अहङ्काराऽहंकुरुष्व प्रणवार्थ विशोधने।
मया तुल्यो न चास्तीति संसारार्णव नाशने ॥ (३७)

हे अहंकार प्रणव के अर्थ शोधन में अहंकार करो। जब शुद्ध आत्म स्वभाव का बोध हो (ज्ञान हो) जाय तब ऐसा अहंकार करो कि मेरे समान संसार रूपी समुद्र का नाश करने वाला कोई नहीं है।

प्राणान् धारय मद्देहे यावदोंकार शोधनम्।
किमत्र वहु नोक्तेन, सर्वाण्यङ्गनिमे सदा ॥ (३८)

जब तक ओंकार का शोधन हो तब तक मेरे देह में प्राणों को धारण करो। यहाँ वहुत कहने से क्या हमारे सब अङ्ग सदा।

रमन्तां प्रणवे दिव्ये न तु मन्त्रान्तरे भ्रमात्।

इदं व्याप्तं यतस्तेन ब्रह्मरूपेण सर्वशः ॥ (३९)

दिव्य प्रणव में रमण करें। भ्रम में किसी अन्य मन्त्र में रमण न करें क्योंकि यह प्रणव शब्द और अर्थ रूप ब्रह्म से सब प्रकार व्याप्त है।

इत्यवोचमहं विप्रा ! अङ्गस्तुति मनुत्तमाम्।
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कवचं वज्रसन्निभम् ॥ (४०)

हे ब्राह्मणों ! इस प्रकार मैंने अति उत्तम अंग स्तुति कही। अब वज्र के समान कवच को कहूँगा।

यस्य स्मरण मात्रेण मुच्यते पातकैर्द्विजा।
कवचानां राजराजं शाश्वतं मोक्षदं शुभम् ॥ (४१)

हे ब्राह्मणों ! जिसके स्मरण मात्र से सम्पूर्ण पातकों से मुक्त हो जाते हैं। जो कवचों के राजाओं का राजा है। सदा मोक्ष दाता शुभ है।

प्रणवकवचस्य ब्रह्मऋषिः। अनुष्टुपछन्दः।
परमात्मा देवता। अंबीजं। ॐ शक्तिः
मङ्कीलकं। अकारादिभिस्त्रिभिः कराङ्गन्यासः ॥ (४२)

प्रणव कवच का ब्रह्म ऋषि है। अनुष्टुप छन्द है। परमात्मा देवता है। अँ बीज है। उँ शक्ति है। मं कीलक है। अँ अँगुष्ठाभ्यां नमः। उँ तर्जनीभ्यां नमः मं मध्यमाभ्यां नमः। अँ अनामिकाभ्यां नमः। उँ कनिष्टाभ्यां नमः। मं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। इसी प्रकार हृदयादिन्यास भी करें।

ॐकारमाद्यं परमात्मरूपं संसारनाशे च समर्थमन्त्रम् ।
अचंचलं प्राप्यमजिह्मभक्तैर्ध्यायेत्सदा देशिकवाक्यमानात्

ओंकार जगत का आदि कारण परमात्मा रूप है। संसार के नाश में समर्थ मन्त्र है। छल कपट आदि दोषों से रहित सर्व इन्द्रियों को एकाग्र करके आचार्य के उपदेश से साङ्ग रहस्य को प्राप्त करके भक्तों को ध्यान करना चाहिये।

न्यासं कृत्वा ततो ध्यात्वा कवचं प्रजपेत्सुधीः ।
ॐकारः पातु मूर्द्धानं सहस्रारेण शोभितम् ॥ (२)

सुबुद्धि मनुष्य प्रथम न्यास करके इसके बाद ध्यान करे। ध्यान करके कवच का जप करना चाहिये। सहस्र कमल दल से शोभित मूर्धा की रक्षा ओंकार करे।

तारकं मे भ्रुवोर्मध्यमाज्ञाचक्रविराजितम् ।
प्रणवः श्रोत्रयुग्मं च नेत्रयुग्मं प्रपञ्चगः ॥ (३)

संसार महाभय से तारने वाला तारक द्विदल कमल आज्ञा चक्र से शोभित मेरे भ्रूमध्य की रक्षा करो। ब्रह्म को प्रणमन कराने वाला प्रणव दोनों श्रोत्र की रक्षा करे। सर्व प्रपञ्च में व्यापक प्रपञ्चग दोनों की रक्षा करे।

नासिकां नासिकाध्यक्षस्तालू पातु परात्परः ।
चिबुकं सर्वदः पातु दन्तान्दानवनाशकः ॥ (४)

नासिका अध्यक्ष नासिका की रक्षा करें। सब कुछ देने वाले सर्वद चिबुक की रक्षा करें। दानव नाशक दाँतों

की रक्षा करें।

ओष्ठद्वयं सदा पायात्कण्ठं पातु ममाऽव्ययः।
भुजद्वयं भुवोऽध्यक्षः करौ पातु कराकृतिः॥ (५)

सर्वकाल सदा दोनों ओष्ठ की रक्षा करें। अव्यय कण्ठ की रक्षा करें। पृथ्वी अध्यक्ष दोनों भुजा की रक्षा करें कर की समान आकृति वाले दोनों कर की रक्षा करें।

कुक्षिं मे पातु सततं पृष्ठं पातुः पुरुषोत्तमः।
कुचद्वयं सदा रक्षेद्वेदान्तवनगोचरः॥ (६)

शाश्वत ब्रह्म मेरी कुक्षि की रक्षा करे। पुरुषोत्तम पृष्ठ की रक्षा करे। दोनों स्तनों की रक्षा वेदान्त रूपी वन में प्राप्त होने वाला करे।

नाभिं पातु नराकारो जघने परमेश्वरः।
गुह्यस्थानं गुह्यरूप ऊरू पातु स्वयंभवः॥ (७)

नराकार नाभि की रक्षा करे। परमेश्वर जघन की रक्षा करे। गुह्य स्थान की गुह्य रूप रक्षा करे। परमार्थ से स्वयं होने वाला उरू की रक्षा करे।

अवाच्य जानुनोर्मध्यं जङ्घे जम्भारिसेवितः।
पादद्वयं तथा विष्णुः पुनर्भवहर नखान्॥ (८)

अवाच्य जानुओं के मध्य की रक्षा करें। जम्भ के शत्रु से सेवित जङ्घा की रक्षा करें।

सर्वाण्यङ्गानि सर्वात्मा पातु वाणीमनः प्रियः।

प्राचीनदेशतः पातु मामवाचीनदेशतः ॥ (९)

सब अङ्गों की रक्षा सर्वात्मा करे। वाणी प्रिय प्राचीन देश से रक्षा करे। मनः प्रिय अवाचीन देश से रक्षा करे।

प्रतीचीनप्रदेशाच्च पायात्प्रत्यक्स्वरूपकः।
उदीचीनप्रदेशाच्च पातु मां मनुजेश्वरः ॥ (१०)

प्रत्येक स्वरूप प्रतीचीन देश से रक्षा करे। उदीचीन प्रदेश से मनुजेश्वर मेरी रक्षा करे। यहाँ पर प्राचीनार्थ (पूर्व) अवाचीनार्थ (दक्षिण) प्रतीचीनार्थ (पश्चिम) उदीचीन का उत्तर अर्थ है।

ऊर्ध्वाधोदेशतः पातु त्रिमूर्त्तिस्वस्वरूपकः।
पञ्चभूतात्मकः पातु पञ्चभूतानि भीतितः ॥ (११)

कारण उपाधि में त्रिमूर्ति ऊर्ध्व देश से रक्षा करे। कार्य उपाधि में स्वस्वरूपक अधोदेश से रक्षा करे। पञ्चभूत स्वरूप पञ्चभूतों के भय से रक्षा करे।

ज्ञानेन्द्रियाणि तद्रूपी कर्त्ता कर्मेन्द्रियाणि।
षण्णामरीणां वर्गं च हिनस्तूर्मीश्च षण्मम ॥ (१२)

ज्ञानेन्द्रिय रूपी ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा करे: कर्मेन्द्रिय रूपी कर्त्ता कर्मेन्द्रियां की रक्षा करे और वही काम, क्रोध, लोभ, मोह मद, मत्सर नामक ६ शत्रुओं के समूह का नाश करे। तथा भूख पिपासा शोक, मोह, जरा, मृत्यु ६ उर्मियों को नाश करे।

षड्भावविकृतीर्मे च द्वन्द्वदुःखानि सर्वशः।
हिनस्तु, सप्तधातूंश्च निरोगान् स करोति च ॥ (१३)

वही प्रणव मेरे उत्पत्ति-सत्ता-बढ़ना, परिणाम होना, क्षीण होना, नाश होना तथा शीत, उष्ण, हर्ष, विषाद आदि द्वन्द रूप दुख सर्व प्रकार से नाश करे। त्वचा, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र धातुओं को सम करके रोगों को दूर करें।

व्याघ्रचोरादिभीतेश्च पातु मां तत्तदाकृतिः।
मार्गभीत्या शत्रुभीत्या चोरभीत्या च कम्पतः ॥ (१४)

उन उन आकृतियों को धारण करके व्याघ्र, चोरादि भीति से प्रणव रक्षा करे। मार्ग भय से, शत्रु भय से, चोर भय से उद्विग्न मनुष्य।

इदं च कवचं जप्त्वा मुच्यते भीतितस्ततः।
व्याघ्रादिप्रबलग्रस्तो जपान्मुक्तिमवाप्नुयात् ॥ (१५)

इस कवच को जप कर सभी भय से मुक्त हो जाता है। व्याघ्रादि प्रबल से ग्रस्त भी जपने से मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

जपित्वा कवचं नूनं तरन्ति भवसागरम्।
कवचेन युतो राजा शत्रूनिव दुरासदान् ॥ (१६)

कवच को जप कर निश्चय ही भवसागर को पार कर जाते हैं और कवच से युक्त मनुष्य राजा के समान दुरासद शत्रु को भी जीत लेते हैं।

तस्मात्पठन्तु सततं त्रिषु कालेषु योगिनः ।
ॐकारकवचं गौर्या इत्येवं शंभुरब्रवीत् ॥ (१७)

तिस कारण तीनों काल में हे योगियों कवच को पढ़ो। इस अभिप्राय से शिव ने गौरी को यह कवच कहा।

॥ इति कवचम् ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रणवब्रह्मणो द्विजाः ।
हृदयं सर्ववेदानां सारभूतं भवापहम् ॥ (१)

हे ब्राह्मणों ! अब प्रणव ब्रह्म का हृदय सर्व वेदों का सारभूत संसार को नाश करने वाला ओंकार का तात्पर्य प्रतिपादक ग्रन्थ को कहूँगा।

ॐकारार्थो विशेषेण यत्र शक्यो न वीक्षितुम् ।
अकारश्च उकारश्च मकारश्च सबिन्दुकः ॥ (२)

जिसमें विशेष रूप से ओंकार का अर्थ नहीं देखा जा सकता। अकार, उकार, मकार स बिन्दुक।

नादः कलाशक्तिरर्धमात्राशान्तनवांशकः ।
तेषामर्थं प्रवक्ष्यामि पार्थक्येन शुचिव्रताः ॥ (३)

नाद, कला शक्ति, अर्ध मात्र, शान्त यह नव अंश हैं। जिसके पवित्र व्रत उनका अलग अलग अर्थ कहूँगा।

प्रपञ्चो जायते यस्माच्चराचरविभागतः ।
वर्णाश्रमादिभेदेन पशुपक्षिमृगादिकम् ॥ (४)

जिससे चर, अचर, वर्ण, आश्रम, पशु, पक्षि, मृग आदि उत्पन्न होते हैं।

रज्ज्वादेरिव सर्पादिरविद्याहेतुको मृषा।
मरौ मरीचिकानीरं यथैवं जायते जगत् ॥ (५)

यह संसार अविद्या के कारण उत्पन्न होता है। जैसे रज्जु में सर्प सीपी में चाँदी आदि मरुभूमि में सूर्य की किरणों से जल उत्पन्न होता है।

इत्याह प्रथम, स्तत्र प्रपञ्चो न च वास्तवः।
यावद्बाधं प्रमाणेन सर्पादेर्जीवनं यथा ॥ (६)

इस प्रकार प्रथम कहा। उसमें प्रपञ्च वास्तविक नहीं है। जब तक प्रमाण से रज्जु का ज्ञान नहीं होता है।

एवं जीवति विश्वं च दृष्ट्वा मोहान्धचक्षुषाम्।
इत्याह तद्द्वितीयोऽपि, जीवनं न च वास्तवम् ॥ (७)

इस प्रकार मोह से जिनकी ज्ञान दृष्टि नष्ट होगई है। उनके लिए विश्व को जीता हुआ देखकर कहा कि वह भी वास्तविक नहीं है। अर्थात् स्थूल, सूक्ष्म, जगत, जो अकार, उकार, मकार का वाच्य है। वह मिथ्या है।

अयसः संनिधानेन तन्मणेश्चलनं यथा।
तथाऽविद्यापि चलति जगद्धेतुत्वकारणम् ॥ (८)

जैसे अयस कान्त मणि के सन्निधान से लोहा चलता है। वैसे ही चेतन के सन्निधान से अविद्या का चलना ही

ब्रह्म का जगद्धेतु स्वारोप में कारण है।

निश्चले निर्विकारे च यथा संसार इष्यते ।
इत्याह तत्तृतीयोऽपि, अविद्या न च वास्तवी ॥ (९)

निश्चल, निर्विकार ब्रह्म में संसार आरोप दृष्टि से माना जाता है। किन्तु लोहा का चलना मणि में नहीं माना जाता। जिससे सिद्ध हुआ कि अलात चक्र रूप से अविद्या का चलना ही जगत भाव से प्रतीत होता है अविद्या से अन्य कुछ नहीं। इस अज्ञान से अविद्या के बाध होने पर संसार का बाध हो जाता है। केवल ब्रह्म रह जाता है। इस प्रकार तीसरा मकरांश का अर्थ हुआ। इस समय अविद्या शबल से पृथक किया अविद्या और उसके कार्य्य का बाध होने पर भी उपाधि से शुद्ध किया तत्वंपदार्थ रूप अधिष्ठान चिन्मात्र विद्वांश का अर्थ है। इसको अविद्या न च से चतुर्थोऽपि यहाँ तक दिखाते हैं।

ब्रह्म बिम्बात्मकं सत्यं जगन्नेयरदीदृशम् ।
अधिष्ठानमबाध्यं स्यादधिष्ठेयस्य बाध्यता ॥ (१०)

अविद्या वास्तविक नहीं है। क्योंकि उसका भी बाध हो जाता है। ज्ञान सत्य का अवलम्ब करके मिथ्या भूत का ही बाध करता है। अतएव ब्रह्म बिम्ब रूप से सत्य है। जगत नहीं। इसी प्रकार जैसे बिम्ब प्रतिबिम्ब का आधार मुख मिथ्या नहीं है। ऐसे ही जीव ईश्वर भेद का अधिष्ठान ब्रह्म मिथ्या नहीं है। ब्रह्म से भिन्न जगत सत्य नहीं है।

रज्वादिरिव सर्पादेः सर्वाधारः परेश्वरः ।
इत्याह तच्चतुर्थोऽपि, आधारत्वं न वास्तवम् ॥ (११)

जैसे रज्जु आदि सर्पादि का आधार है। ऐसे ही सब का आधार परमात्मा है। वास्तव में आधारत्व भी नहीं है। आधारत्वमित्यादि से लेकर पञ्चमस्तत्र यहाँ तक आकाशादि का आधारत्व भी मिथ्या है, कल्पित वस्तु मिथ्या है। तो उसका अधिष्ठानत्व सत्य कैसे हो सकता है। जैसे वन्ध्या का पुत्र जब मिथ्या है तब वन्ध्या में मातापना सत्य कैसे हो सकता है।

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या भेदो न ब्रह्मजीवयोः ।
ईश्वरः संसरत्येवं जीवरूपेण जन्तुषु ॥ (१२)

ब्रह्म सत्य है, जगत मिथ्या है। ब्रह्म और जीव में भेद नहीं। जिस समय यह संसारी होता है। तब भी ईश्वर ही जीव रूप से विद्यमान रहता है।

राजरूपेण भोगी च भिक्षुरूपेण भिक्षुकः ।
इत्याह पञ्चमस्तत्र, जीवरूपं न वास्तवम् ॥ (१३)

वही राजरूप से राजा और भिक्षु रूप से भिक्षुक होता है। वास्तव में जीव रूप भी नहीं है। इस प्रकार कलांश का अर्थ कहा। जीव रूप यहाँ से लेकर षष्ठः तक।

चन्द्रार्ककला न भिद्यन्ते सूर्यादिव च भानवः ।
तथा जीवा न भिद्यन्ते ब्रह्मणश्च उपाधितः ॥ (१४)

चन्द्रमा से कला भिन्न नहीं है। सूर्य से किरण भिन्न नहीं। तैसे जीव से ब्रह्म भिन्न नहीं। उपाधि से भेद है।

उपाधिनाशे नोपाधिस्तत्र यत्नस्ततो महान् ।
इत्याह षष्ठ.स्तत्रापि जीवभेदो न वास्तवः ॥ (१५)

उपाधि क नाश होने पर उपाधि नहीं रहती। अतएव उनके नाश के लिये महान यत्न करना चाहिये। वास्तव में जीव भेद नहीं। इस प्रकार शष्ठांश कहा। तथापि से सप्तमी तक है।

स्थूलसूक्ष्मादिदेहेषु दग्धेषु ज्ञानवह्निना ।
दग्धवस्त्रमिवाभास शक्तिरेकाऽवशिष्यते ॥ (१६)

ज्ञान रूपी अग्नि से स्थूल सूक्ष्म कारण देह के भस्म होने पर जले हुए वस्त्र के समान एक आभास शक्ति शेष रहती है।

तथाऽऽभासः प्रतीयेत यथा पूर्वं च संस्मृतिः ।
इत्याह सप्तमी तत्र, आभासो न च वास्तवः ॥ (१७)

वैसे आभास प्रतीत होता है। पूर्व के समान स्मृति और सब व्यवहार होता है। इस प्रकार सप्तमी अर्ध मात्रांश का अर्थ कहा। उसमें आभास इत्यादि अष्टमी तक।

जीवन्मुक्तिदशां प्राप्य स्वानन्दमनुभूय च ।
अर्द्धं च मीयते यस्मात् ब्रह्माभिन्नं च सर्वशः ॥ (१८)

क्योंकि पञ्च अंश के मध्य में नाम रूपात्मक [आभास

वास्तव नहीं है। सच्चिदानन्द स्वरूप वास्तव है। अन्य अंश भ्रान्ति से सिद्ध है। अतएव जीवन मुक्ति दशा को प्राप्त करके वास्तव स्वानन्द का अनुभव करके स्थित हुआ अभिन्न अर्थ को जानता है। इस कारण उसको अर्ध मात्रा कहते हैं।

अभावस्तस्य विज्ञानमहिम्नाऽनुमितिर्भवेत् ।
अर्द्धमात्रेति सा प्रोक्ता प्राहैवं चाष्टमी यतः ॥ (१९)

विज्ञान की महिमा से सब नाम रूप का बाध हो जाता है। परमार्थ से ब्रह्म से अभिन्न अधिष्ठान मात्र रहता है ऐसा निश्चय होता है। अतएव वह मात्रा अर्ध मात्रा कही गई है। इस प्रकार स्वनाम निर्वचन रूप अष्टमी मात्रा कही है।

कर्मणां न्यायतो न्यासे स्थूलसूक्ष्मादिदेहके ।
नष्टे जन्मान्तराभावे गुरुर्वेदान्तमानतः ॥ (२०)
व्यतिरिक्तं जगत्स्वस्माद्यतो नास्ति ततः स्वयम् ।
शान्तं निर्मलमाकाशं नित्यानन्दं च सर्वगम् ॥ (२१)
स्वे महिम्नि च संसिद्धं पर्यवस्यति केवलम् ।
नात्र भेदो न चाकारो न विकल्पो न कल्पना ॥ (२२)
न किञ्चिन्नैव किञ्चिच्च सिद्धमद्वैतमुत्तमम् ।
इत्याह नवमस्तत्र ततः श्रद्धत्स्व शौनक ! (२३)

विहित कर्मों का न्याय से सन्यास करने पर गुरु वेदान्त के द्वारा तत्व के साक्षात्कार होने से स्थूल, सूक्ष्म, कारण शरीर के नाश होने पर बीज अभाव से जन्मान्तर का

अभाव होने पर समस्त संसार अपने से भिन्न नहीं है। ऐसा बोध होने पर सन्यासी स्वयं शान्त निर्मल आकाश के समान नित्यानन्द सर्व व्यापक सर्वांग पूर्ण अपनी महिमा में स्वयं सिद्ध केवल ब्रह्म ही रूप से रहता है। इसमें न भेद है, न आकार है, न विकल्प है, न कल्पना है। इसमें कुछ भी नहीं है। इसमें निषेध भी नहीं है। अतएव नवांश शान्त का वर्णन किया है।

ज्ञात्वेदं गुरूमूलेन नानावेदान्तसंग्रहम्।
मुच्यते जन्मपाशेन नरो नात्रास्ति संशयः॥ (२४)

गुरु के द्वारा अनेक वेदान्त के संग्रह रूप इस प्रणव के अर्थ को जानकर मनुष्य जन्म बंध से मुक्त होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

शिखां सूत्रं च गायत्रीं गृहं दारान्कुमारकान्।
परित्यज्य जपन्त्वेतं प्रणवं साङ्गमुत्तमम्॥ (२५)

शिखा, सूत्र, गायत्री, गृह, स्त्री, बालक का त्याग कर इस प्रणव का अँग के सहित जप करो।

॥ इति प्रणव हृदयम्॥

साङ्गं प्रणवमाजप्य पुरश्चर्यां ततश्चरेत्।
दशलक्षंजपः प्रोक्तस्तदर्द्धं होम उच्यते॥ (१)

अङ्ग के सहित प्रणवका जप करके उसके बाद पुरश्चरण करे। दशलक्ष जप कहा है। उसका आधा होम कहा है।

तर्पणं स्यात्तदर्द्धं च सहस्रं द्विजभोजनम् ।
एवं कृत्वा सनियमं प्रणवात्मा प्रसीदति ॥ (२)

उसका आधा तर्पण कहा एक सहस्र ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। इस प्रकार नियम के सहित प्रणव का जप करने से प्रणव रूपी आत्मा प्रसन्न होता है।

किमत्र बहुनोक्तेन प्रणवेन तुला न हि ।
गायन्ति श्रुतयः सर्वा जपन्ति मुनयस्तथा ॥ (३)

इस विषय में बहुत कहने से क्या। प्रणव के साथ किसी की तुलना नहीं है। सर्व श्रुतियां इसी का गान करती हैं। सब मुनि इसी का जाप करते हैं।

वाच्यं ब्रह्म परं वस्तु महिमा केन वर्ण्यते ।
शुकादयोऽपि यं जप्त्वा मोक्षमापुर्निरत्ययम् ॥ (४)

इसका वाच्य परमब्रह्म है। अतएव महिमा किस प्रकार वर्णन की जा सकती है। जिसको जप कर शुक देव आदि भी नित्य मोक्ष को प्राप्त होगये।

लौकिकी वैदिकी वाक्च व्याप्ता येन पलाशवत् ।
इत्यवोचमहं सर्वं यत्पृष्टं मुनिसत्तमैः ॥ (५)

लौकिकी वैदिकी सम्पूर्ण वाणी मूल से जैसे पत्र व्याप्त है। उसी प्रकार प्रणव से व्याप्त है। जो श्रेष्ठ मुनियों ने पूछा वह सब हमने कथन किया।

॥ मुनयऊचुः ॥

अहो भाग्यमहो भाग्यमहो फलमहो फलम् ।
पिता त्वं मुनिधौरेय सूत ! त्वन्मुखसागरात् ॥ (६)
ॐ कारकल्पमौक्तेयमणिं बध्वा वयं मुदा ।
स्वकीयकण्ठदेशेषु धारयाम प्रसादतः ॥ (७)

हे मुनि श्रेष्ठ सूत हमारा अहो भाग्य है तथा उस भाग्य का फल तत्त्व ज्ञान भी आश्चर्य रूप है। तुम हमारे पिता हो। तुम्हारे मुख रूपी समुद्र से निकली हुई मुक्ता की मणि को आपकी कृपा से अपने कण्ठ देश में धारण करेंगे।

भापा तस्य तमो नष्टं हृदयस्थं तपोधन ! ।
इत्युक्त्वा मुनयः सर्वे नेमुः सूताख्यदेशिकम् ॥ (८)

उसके प्रकाश से हे तपोधन हमारे हृदय का अन्धकार नाश होगया। ऐसा कहकर सूत नामक आचार्य्य को सब मुनियों ने प्रणाम किया।

पठन्तु श्रण्वन्तु च वाचयन्तु लिखन्तु गायन्तु च बोधयन्तु
ॐ कारकल्पं मुनिवृन्दसेव्यं सूतोक्तमीशोक्तमनिन्दितं च (९)

ॐकार कल्प मुनियों से सेव्य सूत और शिव से कहा गया निन्दा से रहित है।

इति श्री स्कन्द पुराणे वैष्णव संहितायां यन्त्र प्रस्तावे प्रणव कल्पे प्रथमोऽध्याय ॥१॥

प्रणवः परमं ब्रह्म प्रणवः परमः शिवः ।
प्रणवः परमो विष्णुः प्रणवः सर्व देवताः ॥ (१)

प्रणव परम ब्रह्म है। प्रणव परम शिव है। प्रणव परम विष्णु है। प्रणव सब देवता रूप है।

सूत सूत महाप्राज्ञ व्यासशिष्य महामते ! ।
यस्य देवस्य नामानि लोकेषु मुनिसत्तम ! ॥ (२)

हे सूत हे सूत महा प्राज्ञ हे व्यास शिष्य हे महामति जिस देवता का नाम लोक में प्रसिद्ध है। हे मुनि सत्तम उसको कहिये।

प्रथमं नामभिर्यैस्तु सर्वदेवोऽभिपूज्यते ।
सर्वदैवत वृन्दानां पूजने यानि नो वद ॥ (३)
साधारण्येन सर्वज्ञ ! लोकानुग्रह कांक्षया ।

हे सर्वज्ञ जिन नामों से प्रथम सर्व देव की पूजा होती है। साधारण लोकों पर दया की कामना से यह बताइये।

नामानि यानि लोकेषु प्रणवस्य मुनीश्वरैः ॥ (४)
कीर्त्यन्ते नामभिस्तैस्तु सर्वदैवत पूजनम् ।
सर्व देवात्मको यस्मात्प्रणवः परिकीर्तितः ॥ (५)

सूतजी बोले कि जिन नामों से मुनीश्वर लोग सब देवता के पूजन में प्रणव का कीर्तन करते हैं। उनमें प्रथम प्रणव वही है। अतएव प्रणव सर्व देव रूप है।

अस्य श्रीप्रणवाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रमहामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, परमात्मा देवता, अनुष्टुप्छन्दः, अंबीजं, उं शक्तिः, मङ्कीलकं मोक्षार्थे जपे विनियोगः ।

इन १०८ प्रणव महामन्त्र का ब्रह्म ऋषिः है। परमात्मा देवता है। अनुष्टप छन्द है। अं बीज है। उं शक्ति है। मं कीलक है। मोक्ष प्राप्ति के लिये जप में विनियोग है।

ध्यानम्—

ॐ कारं प्रणवात्मबोधविलसत्प्राप्यं चिदानन्ददम् ।
सत्यं ज्ञानमनन्तमूर्त्तिममलं सिद्धात्मकं सर्वगम् ॥
प्रत्यञ्चं पुरुषोत्तमाब्जभवनं व्योमाभरोमावलिं ।
वाणीलक्ष्मियजगज्जनौ कुशलया गौर्या समेतं भजे ॥ (१)

ॐकार के द्वारा प्रणव रूप परमात्मा आत्म रूप से प्राप्य है: अतएव वह चिदानन्द को देने वाला है। वही सत्य ज्ञान अनन्त मूर्ति है। निर्मल सिद्धात्म सर्व व्यापक है। अतएव अन्त: पुरुषोत्तम रूप से सर्व ह्रास (संसार की उत्पत्ति होने में कुशल होने से) हृदय कमल में विराजमान है। आकाश के समान रोमावली है। वाणी लक्ष्मी गौरी के सहित भजन करता हूँ।

एवं ध्यात्वा ततो भक्त्या नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
प्रणवस्य जपेद्विप्राः ! शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ (२)

हे ब्राह्मणो इस प्रकार भक्ति से ध्यान करके और पवित्र

होकर सावधानी से प्रणव के १०८ नामों का जप करना चाहिये।

ॐकारस्तारकं सूक्ष्मं प्रणवः सर्वगोचरः।
दिव्यमेकाक्षरं शुभ्रं शुद्धं निर्मलमव्ययम् ॥ (३)

उच्चार्यमाण होता हुआ सब शरीर को ऊपर उठाता है। इस कारण इसको ऊकार कहते हैं। संसार महाभय से तारता है इसलिए तारक है। सूक्ष्म रूप से सब शरीर में प्रवेश करने से सूक्ष्म है। ब्राह्मणों को ब्रह्म प्राप्त कराता है अतएव प्रणव है सर्वव्यापी होने से सर्व गोचर है। प्रकाश स्वभाव होने से दिव्य है। एक ही है कभी क्षीण नहीं होता। अतएव अक्षर है। शुभ होने से शुभ्र है। अशुद्ध तीनों देहों से अलग होने से शुद्ध है। अविद्या आदि मलों से रहित होने से निर्मल है घटने बढ़ने से रहित होने से अव्यय है।

सत्यो निरत्ययो देवो विश्वव्यापी प्रपञ्चगः।
विष्णुर्ब्रह्मा शिवो धाता विश्वकर्त्ता जगद्गुरुः ॥ (४)

अबाध्य होने से सत्य है नाश रहित होने से निरत्यय है। अनेक प्रकार की सृष्टि आदि से क्रीड़ा करने से देव है। सब संसार में व्यापक होने से विश्व व्यापी है अपने में कल्पित प्रपञ्च का अधिष्ठान रूप से सर्वत्र प्राप्त होने से प्रपञ्चग है। इसमें सब देवता प्रवेश करते हैं अतएव विष्णु है। जगत को बढ़ाता है। इसलिए ब्रह्मा है। निरतिशय आनन्द होने से और अनन्त कल्याण गुणनिधि होने से शिव है।

जगत को धारण पोषण करने से धाता है। शिव कर्ता है। जगत के प्राणियों को परमहित का उपदेश करता है। अतएव जगत गुरू है।

स्रष्टा पालयिता गोप्ता वेदकर्ताऽऽगमाकृतिः।
वेदान्तवेद्यो निलयं दैवतं भवनाशकम् ॥ (५)

आदि में जगत का रचने वाला पोषण करने वाला है। उपातकों से रक्षक होने से गोप्ता है। कल्प के आदि में वेद का प्रगट करने वाला है। रहस्य विद्या स्वरूप है। उपनिषदों से जानने योग्य है। प्रलय में जगत इसमें लय होता है। अतएव निलय है। सर्व देवता स्वरूप है। पुनर्जन्म का नाशक है।

अकारादिक्षकारान्तमातृकावर्णवाचकः।
आलोचनतपःसिद्धजगदुत्पत्तिकारणम् ॥ (६)

अकारादि क्षकारान्त तक सब मात्र का वर्ण रूप से प्रकृति प्रत्यय पद वाक्य महावाक्य रूप से सर्व संवाचक है। आलोचन रूप से सिद्ध जगत के उत्पत्ति का कारण है।

इनपावकवातेन्द्रमृत्युधावनकारणम्।
ईश्वरब्रह्मविष्णुनां रजःसत्त्वतमोभिदा ॥ (७)

सूर्य, अग्नि, वायु, इन्द्र, मृत्यु जिसके भय से निज व्यापार चलते हैं। अतएव इनका कारण है। सत्व रज तम गुणों के कारण विष्णु ब्रह्म रुद्र रूप से जो भिन्न मूर्त्ति है वह भी वही है।

उमावाणीविष्णुपत्नीशक्तिरूपेण संस्थितः ।
ऊरूमस्तककर्णादिनानाङ्गविकलस्तथा ॥ (८)

उनकी शक्ति रूप से लक्ष्मी सरस्वती पार्वती रूप से भी वही स्थित है । उस मस्तक कर्ण आदि अंगों से व्यवहार करता हुआ भी इनसे अलग है ।

ऋक्षाप्रवृतिरोगाणामालयानालयाभिधः ।
ऋषिवृन्दसहस्राणां ज्ञानमोक्षप्रदायकः ॥ (९)

ऋक्ष अर्श रोग को कहते हैं । इन सब रोगों का घर जो शरीर भ्रान्ति से उस रूप से प्रतीत होता हुआ भी उनसे अलग है । सहस्रों ऋषि समूहों को ज्ञान और मोक्ष देने वाला है ।

रूक्षाविदुरप्रज्ञानसम्पन्नस्यापवर्गदः ।
लुप्तलुम्पकलौपन्यत्रितयप्रतिपादकः ॥ (१०)

जो लोग तप से रसना इन्द्रिय को वश में कर लेते हैं । वे लोग रूक्षा भिक्षा के रस को नहीं जानते । उनको अपवर्ग देने वाला है । भूत भविष्य वर्तमान का प्रकाशक है ।

एलादिवासनायुक्तपानीयोत्थानलालसः ।
ऐश्वर्याष्टकभूयिष्ठसिद्धापुरुषसेवितः ॥ (११)

एला आदि से वासित पानी के उत्पादन में वासना है जिनकी । अणिमा आदि अष्ट सिद्धियों से प्रसिद्ध बहुत से देवता सिद्ध किन्नर आदि से सेवित है ।

ॐमादिनिखिलाम्नायमूर्द्धन्याम्नायबोधितः ।

औन्नत्यगर्वसंनद्धदैतेयकुलघातकः (१२)

ओंकारादि सम्पूर्ण आम्नाय के मस्तक रूप मन्त्रों से बोधित है। प्रकृतिके गर्व से युद्धमें मापे राक्षणोंका नाशक है।

अज्ञानतिमिराप्लुष्टजगदाभासदीपकः ।

अः कंजजहरेंद्राद्रिसर्वदैवतकारणम् ॥ (१३)

अज्ञान रूपी अन्धकार से दग्धप्राय जगत के बोध नये दीपक हैं। ब्रह्मा. विष्णु. इन्द्रादि देव का कारण है।

कार्यकारणसंघातदेहावासमनोरथः ।

खादि भूतादि भूतात्मा गम्यागम्यविचक्षणः ॥ (१४)

भूत भौतिक संघात रूप व्यष्टि समष्टि देह में प्रवेश करने को इच्छा वाला रूप आकाशादि समस्त भूतों का आत्मा-रूप से स्थित है। लौकिक अलौकिक समस्त वस्तु का जानने वाला है।

घर्मरश्मिप्रभाकर्त्ता बहिर्मुखपरांमुखः ।

चराचरस्वरूपी च छेतृछेद्यादिदूरगः ॥ (१५)

सूर्य की प्रभा की प्रकाशन शक्ति वाला विषयी पुरुषों से पराङ्मुख है। स्थावर जंगम रूप है। काटने वाला और कटने योग्य वस्तुओं से दूर है।

जप्तृसाहस्रजप्यश्च झडितिप्रतिपादितः ।

सर्वज्ञोऽभिज्ञविज्ञेयटंकवास्यभिसाधितः ॥ (१६)

जिसका जपने वाला असंख्य सन्यासी है। वाचिक मानस जपने योग्य है। जपने पर अपने आप ही ब्रह्मात्म भ.व से मनुभावित होता है। ज्ञान से सबको जानता है। अतएव सर्वज्ञ है। अनुभवी लोगों से ही जानने योग्य होने से विज्ञेय है। पापाड़ को तोड़ने वाला टंक काष्ट को काटने वाला वासी की तरह संसार बन्धन को काटने वाला नाई है। किन्तु ज्ञान से अज्ञान रूप बन्ध को दूर करके नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त रूप से शेप रहता है।

निष्ठुराकृत्तिसम्पृक्तो दम्भेतरविशेषितः।
ढक्कानिनादसम्पृक्तः प्राणित्राणपरायणः॥ (१७)

दृढ़तर संसार बन्ध के नाश होने पर निर्दयाकार रूप रूप चरम साक्षात्कार वृत्ति से मिश्रित है। दम्भादि से भिन्न विशेपण वाला है। ढक्का नाद के समान सकार्य अविद्या पर विजयनाद से मिला है।

तरुणारुणसन्दीप्तजटामण्डलमण्डितः।
स्थाणुः कूटस्थलक्ष्मा च दानादानविचक्षणः॥ (१८)

शिव रूप होने से तपे हुए सोने के समान चमकती जटा से शोभित है। अचल और निर्विकार से स्थित सृष्टि प्रलय करता है।

धनाधिपसमाराध्यो नक्षत्रोडुपमंडनः।
पूज्यपूजकपूजा च फलरूपी फलात्मनाम्॥ (१९)

कुबेर से आराधनीय चन्द्रमा रूप से नक्षत्र ताराओं में

शोभित पूजा करने योग्य पूजा करने वाला पूजन की क्रिया रूप से विराजमान इसी प्रकार स्वर्गादि की कामना से अनुष्ठान करने वालों के फल स्वर्गादि भी हैं।

बिम्बिनीशतसम्पूज्यो भयाभयसुकोविदः।
मर्यादास्थापनाध्यक्षो यायजूकाभिवाञ्छितः॥ (२०)

ध्येयाकार प्रतिबिम्ब के समान पश्चिम वृत वृत्तिपी बिम्बिनी है उन सैकड़ों से पूज्य है। वाह्यद्वैत में अभिनिवेश उसका मूल भय का हेतु होने से भय और ब्रह्म आत्मा के ऐक्य प्रतिष्ठि अभय का हेतु होने से भयाभय कोविद हैं। अतएव जगत की मर्य्यादा स्थापना के स्वामी हैं। यज्ञादि के साधन होने से और उसके फलदाता होने से यज्ञ करने वालों से भीम वांछित है।

रम्भावनविहारी च लावण्यकमनीयदः।
वन्दारुवन्दनीयश्च शङ्करो लोकवासिनाम्॥ (२१)

यज्ञादि फल भोक्तृत्य रूप से रम्भादि अफसराओं से सम्बन्धित नन्दन आदि बन में विहरने वाले हैं। स्वर्गीय पुरुषों को चन्द्रकलामय शरीर देते हैं। भक्तों से स्तुति करने योग्य और सभी लोकों में रहने वालों को तार तम्यता के अनुसार सुख दाता है।

षडाननजनो हेतुः सङ्कल्पितपदार्थदः।
सर्वात्मा सर्वसंपदः सर्वसाक्षी च सर्वदः॥ (२२)

षडानन कीर्तिकेय के उत्पत्ति में हेतु है। भक्त से

संकल्प किया हुआ धर्म अर्थ काम के दाता हैं। ज्ञानियों के सर्वात्मा सम्पत्ति चाहने वालों के लिये सर्व सम्पत्ति दाता हैं। सबको देखने वाले सर्व साक्षी हैं। सब कुछ देने वाले हैं।

सर्वकर्त्ता सर्वभोक्ता सर्वेश्वरनियामकः।
सर्वभूतहृदावासः सर्ववस्तुस्वरूपकः॥ (२३)

सबके कर्त्ता सबके भोक्ता एवं ईश्वरों के ईश्वर सब प्राणियों के हृदय में निवास करने वाले सर्व वस्तु रूप हैं।

हव्यकाव्यादिभोक्ता च कृपालुजनशेखरः।
क्षितिनीराग्निपवनख सोमरविपुंकृति॥ (२४)

देव यज्ञ में हव्यों का पितृ यज्ञ में कव्यों का मानुष्य यज्ञ में हन्तकार अन्न के भोक्ता कृपालु मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ पृथ्वी जल अग्नि पावक आकाश चन्द्रमा सूर्य स्वरूप हैं।

शब्दब्रह्म परब्रह्म कार्यब्रह्म च ब्रह्म च।
इतीदं प्रणवस्यास्य नाम्नामष्टोत्तरं शतम्।
सर्वदैवतपूजार्थे निमित्तं वेदसंततम्॥ (२५)

नाम आख्यात उपसर्ग निपात प्रकृति, प्रत्यादि घटित मूर्त्तिवेद व्याहृति का सार होने से शब्द ब्रह्म है। विराट हिरण्यगर्भ आदि ऊपर ब्रह्म की अपेक्षा के कारण रूप से पर होने से परब्रह्म मकार का अर्थ है। वह सर्व सूक्ष्म स्थूल सृष्टि से उपहित कार्य्य ब्रह्म अकार उकार का अर्थ है। इसी तत्व पदार्थ के शोधन द्वारा कार्य कारण उपाधि का परित्याग

कर देने से शुद्ध ब्रह्म प्रणव शब्द का लक्ष्य अर्थ है। इस प्रकार यह प्रणव को १०८ नाम सब देवता की पूजा के लिए वे संमत है।

चिद्विलासविलासाय ॐकाराय नमोनमः ।
यः पठेत्सततं जन्तुर्मुच्यते सर्वपातकैः ।
यतिभिः पठनीयं च नियमेन त्रिकालतः ॥ (२६)

चिद्विलास का विलास रूप ओंकार को नमस्कार है नमस्कार है जो जीव इसको निरन्तर पढ़ता है वह सब पापों से मुक्त हो जाता है। सन्यासियों को नियम से तीनों काल पढ़ना चाहिये।

सर्ववेदफलं प्रैति ब्रह्मचारी पठेद्यदि ।
वनस्थस्तापसीं सिद्धिं गृहस्थः कर्मणां फलम् ॥ (२७)

यदि ब्रह्मचारी पढ़ता है तो सब वेद का फल प्राप्त करता है। वानप्रस्थ तापसी सिद्धि प्राप्त करता है। ग्रहस्थ कर्म के फल को प्राप्त करता है।

नित्यं निर्दुःखमानन्दं सन्यासी लभते तदा ।
यस्मिन्देवे यस्य भक्तिस्तेन नामभिरेतकैः ॥ (२८)
चतुर्थीनमॐकारपूर्वैर्देवः स पूज्यताम् ।
नामान्येतानि पार्वत्यै इत्येवं शंभुरब्रवीत् ॥ (२९)

दुःख से रहित नित्य आनन्द सन्यासी प्राप्त करता है। जिसकी जिस देवता में भक्ति हो वह उन्हीं देवताओं के नाम

के पूर्व ओंकार लगाकर अन्न में चतुर्थी विभक्ति लगाकर जप करें। इस प्रकार शंकर ने पार्वती को कहा है।

अथातः संप्रवक्ष्यामि रहस्यं देवदुर्लभम्।
साङ्गोपाङ्गागमानां च पठने तुल्यदं फलम्॥ (३०)

अब मैं देव दुर्लभ रहस्य कहूँगा अङ्ग के सहित तथा उपाङ्ग के सहित वेद के पढ़ने से जो फल मिलता है वह इसके पढ़ने से फल मिलेगा।

ॐकारः प्रणवोऽनन्तः सर्वव्यापी च तारकम्।
शुक्लं सूक्ष्मं वैद्युतं च परं ब्रह्म तथैव च॥ (३१)

ओंकार इत्यादि पंचदश नाम कहते हैं। ओंकार प्रणव अनन्त सर्व व्यापी तारक शुक्ल, सूक्ष्म, वैद्युत पर ब्रह्म, इन सब का अर्थ पहिले कर दिया है।

एकश्च एकरुद्रश्च ईशानो भगवांस्तथा।
महेश्वरो महादेवः प्रत्यगात्मा तथैव च॥ (३२)

एक, एक रुद्र, ईशान, भगवान, महेश्वर, महादेव, प्रत्यगात्मा।

षोडशैतानि नामानि प्रणवब्रह्मणो द्विजाः।
मुमुक्षोर्मोक्षदानाय जगादाथर्वणो श्रुतिः॥ (३३)

हे ब्राह्मणों प्रणव ब्रह्म के ये १६ नाम मुमुक्षुओं को मोक्ष देने के लिये अथर्व वेद की श्रुती ने कहा है।

यः पठेत्त्रिषु कालेषु ज्ञात्वा माहात्म्यमेषु सः।

अपवर्ग शुभं प्रैति जन्तुस्तेनाऽभिवीक्षितः ॥ (३४)

जो कोई इसके महत्म्य को जानकर तीनों काल में पढ़ता है। वह प्रणव रूप परमेश्वर से अभिवीक्षित हुआ शुभ मोक्ष रूप फल को प्राप्त करता है।

पठन्तु शृण्वन्तु च वाचयन्तु लिखन्तु गायन्तु च बोधयन्तु।
ओङ्कारकल्पं यतिवृन्दसेव्यं सूतोक्तमीशोक्तमनिन्दितं च ॥

इसका अर्थ पहिले कर दिया है।

इति श्री स्कन्दपुराणे वैष्णवसंहितायां मन्त्रप्रस्तावे
प्रणवकल्पे द्वितीयोऽध्यायः ॥

प्रणवः परमं ब्रह्म प्रणवः परमः शिवः।
प्रणवः परमो विष्णुः प्रणवः सर्वदेवताः ॥ (१)

इसका अर्थ पहिले कर दिया है।

अथातः संप्रवक्ष्यामि पञ्जरं वज्रपञ्जरम्।
प्रणवब्रह्मणो विप्राः! पापघ्नं शंभुरब्रवीत् ॥ (२)

हे ब्राह्मणों अब वज्रमय पंजर के समान अभेद्य प्रणव ब्रह्म के पञ्जर को कहूँगा। जिसको शिव ने पाप नाशक कहा है।

ॐकारः पातु तिष्ठन्तं शयानं प्रणवोऽवतु।
गायन्त पात्वनन्तो मां भुञ्जानं परमेश्वरः ॥ (३)

मुझको बैठेहुए ओंकार रक्षाकरें। सोतेहुये प्रणव रक्षाकरें, गातेहुये अनन्त रक्षाकरे भोजन करते हुये परमेश्वर रक्षा करें

सर्वव्यापी सर्वदिक्षु सर्वाण्यङ्गानि सर्वगः ।
सम्यक्कर्मसु मां देवः सर्वशास्त्रेषु मायिकः ॥ (४)

सर्व व्यापी सर्व दिशाओं में रक्षा करें। सब अंगों की सब स्थानों में रहने वाला रक्षा करें। शास्त्र विहित कर्मोपासना में उन उन कर्मोपासना से पूजनीय देव रक्षा करें।

निद्राणं पातु मां भद्रः करोतु शुभमव्ययम् ।
पादादिमस्तकान्तानि रक्षत्वङ्गानि रक्षकः ॥ (५)

मंगल रूप प्रमाद से प्रसक्त दिन संध्या आदि में निद्रा से रक्षा करें। तथा शुभ कर्म के व्यय को हटाकर अपव्यय करै। पाद से लेकर मस्तक तक अंगों की रक्षा उन उन अंगों का अधिष्ठाता रक्षक करें।

विनाशयेदहङ्कारं बुद्धिमात्मनि चोदयेत् ।
करोतु निर्मलं चित्तं निर्ममत्वादिचिन्तितः ॥ (६)

अहंङ्कारादि से उपहित चिद्रूप से अथवा उन उन का अधिष्ठाता देवता रूप चिन्तित ममत्वादि से रहित होने से हमारे चित्त को निर्मल करें।

दौर्ज्जन्यं वर्ज्जयेद्दूरं मयि सर्वबलं बनः ।
सुखीकरोतु मामात्मा पैशाच्यादिभयं हरेत् ॥ (७)

सर्व बल रूप बन दुष्ट बीज योनि देशकाल आदि जन्म से युक्त बुद्धि के दोष को दूर करै। दुष्कर्म वश से भावि पैशाचादि भय से इस समय पिशाचादि की चेष्टा से उत्पन्न भय को

आत्मा हरण करै। मुझको सुखी करैं।

सम्पन्नः सम्पदो दद्याद्विपदो विनिवर्तयेत्।
मूलाधारादि षट्चक्रं पातु षट्चक्र गोचरः ॥ (८)

अणिमादि ऐश्वर से सम्पन्न परमात्मा इस लोक की पुत्र धनादि सम्पत्ति और परलोक की अणिमादि सम्पत्ति देवै और विपत्ति को दूर करैं। गणेशादि देवता रूप से मूलाधारादि षटचक्र गोचर उन उन चक्रों की रक्षा करैं।

भवाब्धि पोतान्मान्तत्र पतन्तमभिरक्षतु।
यमभीति करस्तस्माद्‌भयान्मामति घोरतः ॥ (९)

यम को भय देने वाला परमात्मा संसार सागर से (गिरते रक्षा करै) पार करने वाली भगवान की भक्ति रूपी नौका से गिरते हुये रक्षा करै और अति घोर यम के भय से रक्षा करै।

पुनर्जन्म निराकुर्यादानन्दं स प्रयच्छतु।
पापकर्मसु मां शुभ्रो विमुखं विदधातु च ॥ (१०)

शुक्ल रूप परमात्मा पुनर्जन्म की निराकरण करै और आनन्द को देवै। पाप कर्म से विमुख करै।

सन्धिभ्यो मां सन्धिकर्त्ता पायान्मर्मसु मर्मगः।
निर्ममत्वं सदा दद्यात्प्रणवः सर्वगोचरः ॥ (११)

सब देह की सन्धि का कर्त्ता सब सन्धि से उत्पन्न रोगों से रक्षा करै। सर्व मर्म स्थानों में रहने वाला मर्म में रक्षा

करै। सर्व गोचर प्रणव सदा ममता रहित करै।

राज्ञो भयात् मन्त्रराजोऽराजभीत्या अराजकः।
पादाक्रान्तानरीन्कुर्यात्छत्रु सङ्घ भयङ्करः॥ (१२)

मन्त्रराज राज भय से रक्षा करै। अराजक अराज भय से रक्षा करै। शत्रु समूह को भय देने वाला शत्रुओं को हमारे पाद के नीचे दबा हुआ करै।

सर्व वश्यं करोत्वार्यः सर्वदा मयि तिष्ठतु।
इतीदं पञ्जरं दिव्यं प्रणवब्रह्मणो द्विजाः!॥ (१३)

पूज्य सबको मेरे वश में करै। सब अङ्गों में सदा रक्षक रूप से स्थित रहे। हे ब्राह्मणों जो इस प्रणव ब्रह्म के दिव्य पञ्जर को—

यः पठेत्सततं जन्तुर्महापातक नाशनम्।
काव्यानां नाटकानां च दर्शनानां च सर्वशः॥ (१४)

सदा पढ़ेगा उसके महा पातक का यह नाशक होगा। काव्यों नाटकों और सब दर्शनों का सब प्रकार से—

अलङ्कारमतानां च पुराणानां च सर्वशः।
वेदान्तानां च वेदानां गुरुशिक्षांविना स्वतः॥ (१५)

अलङ्कार के मतों का सब प्रकार से पुराणों का वेदान्त और वेदों को गुरु शिक्षा के बिना अपने आप—

ग्रन्थ जालस्य सर्वस्य स वेदार्थं महामयिः।
ज्ञात्वा ग्रन्थार्थमेतेषां व्याख्याय छात्रकान्प्रति॥ (१६)

वह महा बुद्धि सब ग्रन्थ जाल के अर्थ को जानकर और इनके अर्थों को छात्रों के प्रति व्याख्यान करके—

अन्ते वेदान्त सिद्धान्त ब्रह्म प्राप्नोत्यनुत्तमम् ।
ॐकार पञ्जरं गौर्यै इत्येवं शम्भुरब्रवीत् ॥ (१७)

अन्त में वेदान्त सिद्धान्त अनुतम ब्रह्म को प्राप्त होता है इस प्रकार शंकर जी ने ओंकार पञ्जर को पार्वती के लिए कहा है ।

॥ इति प्रणव पञ्जरं सम्पूर्णम् ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रणव ब्रह्मणो द्विजाः ! ।
मालामन्त्रं पुरा शम्भुर्यथा प्रोवाच पार्वतीम् ॥ (१८)

इसके बाद हे ब्राह्मणों प्रणव ब्रह्म के माला मन्त्र को कहूँगा । जिस प्रकार शम्भु जी ने पहिले पार्वती को कहा है ।

ॐनमो भगवते ॐकाराय निखिलवेदविदिताय वेदस्वरूपिणे अखिल वाग्रूपिणे वागभिन्न प्रपञ्च रूपाय परब्रह्मणे करुणाकर विग्रहाय शब्द ब्रह्मणे प्रतीचे पराचे संसारपारावार तारकाय सकलकर्त्रे सकल भोक्त्रे सुरासुर स्वरूपाय चराचर कलेवरायाऽत्यन्त पुरुषार्थाय समस्त मुनि प्राप्याय प्रणवाय सर्वभूतहृदयाय अरूपिणे अदेहायाऽद्वैतात्मने । (२)

सम्पूर्ण वेद से विदित वेदस्वरूपी और सब वाणी

रूप वांणी से अभिन्न संमार रूप परब्रह्म करुणाकर स्वरूप शब्द ब्रह्म अन्तर्मुख दृष्टि वालों को प्रतीचि और वहिर्मुखों को पराच संमार लक्षण पारवार के तारक सब संमार के कर्त्ता मोक्तासुर असुर स्वरूप स्थावर जगम शरीर अत्यन्त पुरुषार्थ रूप समस्त मुनियों से प्राप्त होने योग्य प्रणव रूप सर्व प्राणियों के हृदय रूप रहित स्थूल सूक्ष्म करण शरीर रहित अद्वैत रूप भगवान ओंकार को नमस्कार है।

भो भो नित्यशुद्धमुक्त स्वरूप ! भेदबुद्धि प्रदायिनीं ग्रहणाग्रहण रूपिणीं सकार्यां सविलासिनीं महामायां विनाशय विनाशय, कामक्रोधलोभादि शत्रून्मारय मारय शमदमादीन् सचिवान्संयोजय संयोजय, सुधर्मिणीं महाजायां मोक्षलक्ष्मीं विवाहय विवाहय, अपवर्गसाम्राज्ये मामभिषेचयाभिषेचय, स्वरूपं प्रकटय प्रकटय, जरामरणादि पिशाचानुच्चाटयोच्चाटय, शब्दादिवृश्चिकभयं निवारय निवारय, मातृयोनियन्त्रप्रपीडनं निवर्तय निवर्त्तय।

हे हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वरूप मैं ब्रह्म नहीं हूँ। इस प्रकार अपनी आत्मा में भेद बुद्धि को देने वाली देहादि में आत्मा बुद्धि ग्रहण, ब्रह्म स्वभाव की स्फूर्ति न होना अग्रण रूपिणी आकाशादि कार्य के सहित जाग्रद आये विलास के सहित सब अविद्या का समष्टि रूप होने से महा माया को

अपने तत्व साक्षात्कार को उत्पन्न करके नाश करो नाश करो। काम क्रोध लोभादि शत्रुओं को मारो मारो शमदम आदि सहायकों को मिलाओ, मिलाओ। सदा रहने वाली सुद्धर्मिणी त्रिविधि परिच्छेद से रहित परमात्मा जिसमें उत्पन्न होता है। ऐसी महात्मा रूप मोक्ष लक्ष्मी को विवाहो विवाहो। मुक्ति रूप साम्राज्य में मुझको अभिषेक करो अभिषेक करो। अपने पारमार्थिक रूप को प्रकट करो प्रकट करो। जरा मरण आदि पिशाचकों का उच्चाटन करो उच्चाटन करो। शब्दादि विषय रूप वृश्चिक को निवारण करो निवारण करो। माता के योनि यन्त्र रूप पीड़ा को निवृत्त करो निवृत्त करो।

महाभावैकगम्य! निरुपद्रव! निरतिशयैश्वर्य! बहुभयसंरक्षक! सान्तं सलक्षणं साङ्गोपाङ्गं सोपनिषत्कं सरहस्यं वेदं बोधय बोधय, मूर्तित्रय! मूर्तिरहित! शक्तित्रय! शक्तिरहित! आशापाशं छिन्धि छिन्धि, त्रिलोचनस्यापि व्यामोहैकनिदानं भगवन्तं मकरध्वजं भिन्धि भिन्धि, चतुर्दशभुवनात्मक! निःसीमदर्शनदरीदृश्यमान! चतुःषष्टिकलापराङ्मुख! निखिलमन्त्रयन्त्रप्रवर्तक! मातृकावर्णस्वरूप! कलिमलप्रध्वंसिन्! कालभयपरावर्त्त! विषयविपिने पतन्तं मार्गादर्शिनं मार्गमाणं त्रातारमाक्रोशन्तेक्षुतृष्णाव्याघ्रादिभिः पेपीयमानमार्त्तं

मुमुक्षुं मामुद्धरोद्धर, आत्मन् ! प्रत्यक्शब्दवाच्य ! निरु पमवैभव ! नित्योत्सव ! अतीतद्वन्द्वदुःख ! मूढजनदुःखप्रद ! भक्तजनकल्पद्रुम ! उपनिषदेकवेद्य ! समस्त वेदवन्दिस्तुत्य ! ब्रह्मादिसमाराध्य ! स्वात्मानं मां प्रापय प्रापय स्वाहा ।

हे एव महा भाव रूप निर्विकल्प समाधि से जानने योग्य हे उपद्रव से रहित । हे निरतिशय ऐश्वर्य बहुत भय से रक्षा करने वाले ? वेदान्त के सहित ब्रह्मादि लक्षण गण सहित शिक्षा आदि षट् अङ्ग और पुराण आदि उपाङ्ग के सहित उपनिषद आदि गुह्य विद्या के सहित मन्त्र आदि रहस्य के सहित वेद को मुझे समझावो समझावो ? सृष्टि आदि व्यापार के लिए ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र रूप हे मूर्तिमय ? परमार्थ में भय मूर्ति से रहित ? हे ज्ञान इच्छा क्रिया रूप मय शक्ति परमार्थ में उनसे रहित आशा रूपी पास को छेदो छेदो त्रिलोचन शिव को भी मोहित करने वाले जगत को जय करने वाले ऐश्वर्य से उन्नत काम को चेदन करो चेदन करो । हे चतुर्दश भुवनस्वरूप ? अतएव निरतिशय सर्वज्ञ लक्षण अपरि छिन्न सर्व वस्तु के साक्षात्कार से साफ सबको देखते हुए, ६४ कला से पराङ्मुख सम्पूर्ण मन्त्र यन्त्र के प्रवर्तक ! सभी मातृ का वर्णरूप कलियुग के मल को नाश करने वाले ! काल के भय से रहित ? विषय रूपी वन में पड़ा हुआ मार्ग

को न जानने वाला अतएव मार्ग बतलाने वालों को ढूढने वाला उसी को पुकारता हुआ ? भूखा पियासा आदि व्याघ्र वृश्चिक दंश कीटादि के द्वारा रक्त शोषण से पिया जाता हुआ। मुझ मुमुक्षु का उद्धार करो उद्धार करो। हे आत्मन प्रत्येक शब्द वाच्य उपमा से वैभव वाले नित्य उत्सव रूप द्वन्द दुखों से रहित मूढ़ जनों का दुःख दाता, चन्द्र जनों को कल्प वृक्ष के समान उपनिषद से जानने योग्य समस्त वेद रूपी वन्दियों से स्तुति करने योग्य ब्रह्मा आदि से पूजनीय मुझको अपनी आत्मा को प्राप्त करावो प्राप्त करावो।

ॐ कारमालिकामन्त्रमित्येवं शंभुरब्रवीत् ।
स्मरन्नेतन्मन्त्रराजमनिच्छन्नपि मुच्यते ॥ (५)

इस प्रकार ओंकार मालिका मन्त्र को शिव जी ने कहा है इस मन्त्रराज का स्मरण करता हुआ मुक्त होता है।

ॐकाराय विद्महे भवताराय धीमहि ।
तन्नः प्रणवः प्रचोदयात् ॥ (६)

ओंकार स्वरूप प्रत्यगभिन्न ब्रह्म को प्राप्त करने के लिए साक्षा तत्वा भेद से जानता हूँ। संसार को तारने वाले का ध्यान करते हैं। वह प्रणव रूप परमात्मा हमारी बुद्धि को प्रेरणा करे।

॥ अथ प्रणव यन्त्रम् ॥

आदावकारमथ ॐ प्रणवेन सन्धि
बिन्दुद्वयं तदनुवेष्टनलेखनं च ।
हंकारतश्च यरवान् लमधः पृथिव्यां
यन्त्रं नवस्य मुनिभिः परिकीर्तितं च ॥ (७)

आदि कुक्षि में अकार, द्वितीय कुक्षि में उकार, तृतीय कुक्षि में मकार तीनों का प्रणव भाव से ऊँकार बिन्दु दो शेष कुक्षि दो में चन्द्र सूर्यात्मक बिन्दु दो का अथवा प्रणव का अथवा दोनों में से एक का मुच्छ में पीठ के सहित वेष्टन करै। आकाशादि कोष्ठों में यं रं वं इस प्रकार लिखकर चौकोन पृथ्वी चक्र में लङ्ग लिखै। यह प्रणव का यन्त्र कहा है। इसको सम्प्रदाय के अनुसार से गुरु से सीखना चाहिये।

॥ प्रणव स्तव राज ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि स्तवराजं भयापहम् ।
प्रणव ब्रह्मणो विप्राः ! साक्षान्मोक्षैकदायकम् ॥ (१)

हे ब्राह्मणो! अब प्रणव ब्रह्म का स्तवराज कहूँगा। जो संसार भय का नाशक है और साक्षात मोक्ष दाता है।

उत्पत्तिस्थितिभङ्गानि जायन्ते जगतो यतः ।
कार्यकारणकर्त्तारमोङ्कारं प्रणमाम्यहम् ॥ (२)

इस संसार की उत्पत्ति रक्षा नाश जिससे होता है। जो कार्य कारण कर्त्ता रूप है। इस ओंकार को प्रणाम है।

यो गूढः सर्वभूतेषु सर्वभूतानि शास्ति यः।
सर्वभूतस्वरूपी च ॐकारं प्रणमाम्यहम् ॥ (३)

जो सब भूतों में छिपा है और सब पर शासन करता है। उस सब भूत रूपी ओंकार को मैं प्रणाम करता हूँ।

विश्वं चराचरं सृष्ट्वा तदन्तः प्रविवेश यः।
तिलेषु तैलवत्सूक्ष्मः प्रणवं प्रणमाम्यहम् ॥ (४)

जो चर अचर संसार को रचना करके उसके अन्दर जीव रूप से प्रवेश किया है। जो तिल में तेल के समान सूक्ष्म रूप से व्याप्त है। उस प्रणव को मैं प्रणाम करता हूँ।

अग्रे सृष्टे प्रपञ्चस्य य आस्ते वटबीजवत्।
स्रष्टारं च पुनस्तस्य प्रणवं प्रणतोस्म्यहम् ॥ (५)

जो सृष्टि से वह वटबीज के समान सूक्ष्म था। पुनः सृष्टि के समय इस प्रकाश का स्रष्टा हुआ। उस प्रणव को प्रणाम करता हूँ।

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं भूतानि व्याप्य जीववत्।
यः संसरति भूतात्मा प्रणवं प्रणतोस्म्यहम् ॥ (६)

ब्रह्मा से लेकर सूक्ष्म जीव स्तम्भ तक भूतों में व्याप्त होकर जो जीव के समान सबके देहात्मभाव को प्राप्त होकर एक देह से दूसरे देह में जाता है। उस प्रणव को मैं प्रणाम करता हूँ।

ईश्वर ब्रह्म विष्णूनां रजः सत्त्वतमोगुणैः।

जनकं यत्परं वस्तु तारकं पातु नः सदा ॥ (७)

सत्व रज तमोगुण से विष्णु ब्रह्म रुद्र के शरीर का जो कल्पक है। जो सबसे परे सब का तारक है। उस प्रणव को मैं प्रणाम करता हूँ। वह सदा रक्षा करे।

सर्वभूतहृदाकाशे काशते निर्मलं परम्।
आकाशवत्सर्वगं यत्तारकं पातु सर्वदा ॥ (८)

जो सर्व प्राणियों के हृदय आकाश में निर्मल रूप से परम प्रकाश करता है। जो आकाश के समान सब स्थानों में व्यापक है। वह तारक सदा हमारी रक्षा करे।

वेदा यस्य शिरः प्रोक्तं शास्त्राण्यङ्गानि यस्य च।
अङ्गानि यस्य रोमाणि प्रणवः स विराजते ॥ (९)

वेद जिसका शिर कहा गया है शास्त्र जिसके अङ्ग हैं। वेदाङ्ग जिसके रोम हैं। वह प्रणव शोभित है।

पुराणं वाचकं यस्य ज्ञापकं धर्मशास्त्रकम्।
इतिहासा यस्य हासाः प्रणवः स विराजते ॥ (१०)

पुराण जिसका वाचक है, धर्म शास्त्र ज्ञापक है इतिहास जिसको हासी हैं। वह प्रणव शोभित है।

वेदान्ता यस्य सर्वेऽपि शरीरश्रुतिमस्तकम्।
वाग्जालं येन संव्याप्तं प्रणवः स विराजते ॥ (११)

सभी वेदान्त जिसके शरीर के समान मुख्य अभि- व्यक्ति के स्थान हैं श्रुतियां मस्तक हैं जिसने सम्पूर्ण वाग्जाल

को व्याक्त किया है। वह प्रणव शोभित होरहा है।

यज्जप्त्वा परमात्मानं विश्वामित्रादयो द्विजाः।
ब्राह्मण्यं लेभिरे ब्रह्म तारं दिशतु नः फलम् ॥ (१२)

जिस तार ब्रह्म को जप कर विश्वामित्र आदि ब्रह्म निष्ठता को प्राप्त किये। वह तारब्रह्म रूप को वेदन का फल प्रदान करै।

यं मत्वा विभुमीशानं दुःखं नोपैति साधकः।
सर्वदुःखौघसंहर्तृ तारं दिशतु नः फलम् ॥ (१३)

जिसु विभु ईशान को जान कर साधक दुख को नहीं प्राप्त करता। वह दुख के समूह को नाश करने वाला तार हमको ब्रह्म ज्ञान का फल प्रदान करै।

आलोच्य सर्वशास्त्राणि निश्चिन्वन्ति मुनीश्वराः।
ध्येयं तारकमित्येव तारकं तदुपैम्यहम् ॥ (१४)

(जिसु विभु को जानकर) मुनीश्वर सब शास्त्रों को मथन करके जिस तारक को ही एक ध्यान करने योग्य निश्चय करते हैं। उस तारक को मैं भी प्राप्त करूँ।

वेदान्ताम्भोज सङ्घानां भास्कराय प्रकाशिने।
निर्मलाय स्वरूपाय प्रणवाय नमो नमः ॥ (१५)

वेदान्त रूपी कमल के समूहों को प्रकाश करने वाले सूर्य के समान निर्मल स्वरूप प्रणव को नमस्कार है नमस्कार है।

जीवा जीवन्ति येनैव प्राणापानादिचेष्टया ।
यमाश्रिता उभौ तस्मै प्रणवाय नमो नमः ॥ (१६)

जिससे सभी जीव प्राण अपान आदि चेष्ट से जीवन प्राप्त करते हैं। प्राण अपान जिसके आश्रय से रहते हैं। उस प्रणव रूप परमात्मा को प्रणाम है प्रणाम है।

इतरस्य महामन्त्रजालस्य फलदोऽपि यः।
सवमन्त्रादि रूपाय प्रणवाय नमो नमः ॥ (१७)

अपने से भिन्न सभी वैदिक तांत्रिक महामन्त्र जाल का उन उन देवता रूपसे प्रसन्न हुआ, उन उन साधकों को इच्छित फल दाता जो प्रणव है। अतएव सब देवता रूप प्रणव को बार बार प्रणाम है।

प्रत्यग्रूपाय दिव्याय रविमण्डल वासिने ।
पुरुषेष्वधिवासाय तारकाय नमो नमः ॥ (१८)

सब प्राणियों के हृदय में प्रत्येक आत्म रूप से जो अध्यात्म है। रवि मंडल में अधि दैवत रूप से जो विराजमान है। उस समष्टि व्यष्टि रूप से सब स्थानों में निवास करने वाले प्रणव को बार बार प्रणाम है।

रज्जुर्यथा सर्वरूपा भ्रान्त्या भाति तथाऽव्ययम् ।
तारकं विश्वरूपेण भाति तस्मै नमो नमः ॥ (१९)

जैसे (रज्जू) रस्सी भान्ति से सर्प रूप प्रतीत होती है तैसे ही अव्यय तारक विश्व रूप से प्रतीत होरहा है। उस

तारक प्रणव को नमस्कार है नमस्कार है।

विश्वस्य यं हि गायत्रीं त्यजन्ति यतिपुङ्गवाः।
ॐकाराय नमस्तस्मै ॐकाराय नमो नमः॥ (२०)

श्रेष्ठ सन्यासी जिस ब्राह्मणाय स्थापक तारक प्रणव का विश्वास से अवलम्बन करके शंका रहित होकर शिखा सूत्रादि अंग के सहित गायत्री का त्याग करे हैं उस प्रणव रूप ओंकार को बार बार प्रणाम है।

आरोपयन्ति वाचाऽग्नौ गायत्रीं यद्दिक्षया।
ॐकाराय नमस्तस्मै ओङ्काराय नमो नमः॥ (२१)

जिस सामान्य वाक्यों का स्वरूप ऊँकार रूप अग्नि में व्याहृति के सहित गायत्री को सन्यास के समय आरोपित करते हैं। उस ओंकार को बार बार प्रणाम है।

स्तवराजं स्तवश्रेष्ठं शृण्वन्ति च पठन्ति च।
ये मानवा विपापास्ते यान्ति मुक्ति सुदुर्लभाम्॥ (२२)

स्तव श्रेष्ठ स्तव राज को जो मनुष्य पढ़ते हैं और सुनते हैं वे पाप से रहित होकर अति दुर्लभ मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

तस्मात्पठन्तु सर्वेऽपि मोक्षवाञ्छाऽस्ति वो यदि।
स्तवराजं महादेव्यै इत्येवं शम्भुरब्रवीत्॥ (२३)

यदि तुम लोगों को मोक्ष की इच्छा है तो सब लोग भी इसको पढ़ो इस प्रकार शंकर जी ने पार्वती से कहा है।

॥ इति प्रणव कल्पे प्रणव स्तवराज समाप्तः॥

ॐकाराक्षरमालिकामनुमियं वक्ष्यामि हे भूसुरा !
मोक्षप्राप्तिकरं विशेष सुखदं नित्योत्सवं शाश्वतम् ॥
पार्वत्यै सुरसेवितांघ्रि कमलः शम्भुर्यथा भाषते ।
यो मन्त्रो यतिपापनाश करणोपायाय सन्निर्मितः ॥१॥

हे ब्राह्मणों इस समय मैं ॐकाराक्षर मालिका स्तव लक्षण मन्त्र के समान शुद्ध होकर जपने योग्य स्तोत्र को कहूँगा। मुमुक्षुओं को मोक्ष कराने वाला, भोग सुख को चाहने वालों को विशेष सुख देने वाला, दोनों को नित्य जिससे आनन्द प्राप्त होता है और सदा ही अविहत सामर्थ्य वाला है। क्योंकि सर्वज्ञ जगदीश्वर शङ्कर जी पार्वती से कहते हैं और जो मन्त्र सन्यासियों के पाप का नाश करने वाला तथा शमदमादि ज्ञान प्राप्ती के साधनों को सिद्ध करने वाला है। जिसको स्वयं जगदीश्वर ने ही रचा है जो हमारी बुद्धि से कल्पित नहीं है।

ॐकारं परमीशतत्त्वमखिलं वेदार्थ तत्त्वप्रदं ।
नित्यं निर्मलमव्ययम निरुपमं निःशेषबीजाभिधम् ॥
कार्यं कारणमात्मनिष्ठमखिलं प्रोत्साहपूर्वं स्मृतं !
भेदाभेदविवर्जितं श्रुतिशिरोमानं सदा ध्यायति ॥ (२)

जो यह ओंकार सन्यासियों को मोक्ष प्राप्ति कराने वाला और सब पाप हरने वाला। अतएव समस्त आत्मनिष्ठ पतिवृद्ध अरुरुक्षु और आरूढ़ उत्साह पूर्वक ओंकार का ही

ध्यान करते हैं। वह ओंकार निरतिशय आनन्द स्वरूप ब्रह्म का ज्ञान कराने वाला है। जो परमात्मा का पारमार्थिक स्वरूप है। अतिएव काल के परिच्छेद से रहित है और अविद्या आदि मल से भी रहित है। सब विकारों से शून्य है। उपमा से रहित है। भेद अभेद से वर्जित है। कार्य कारण समस्त बीज नाम वाला है: उसमें केवल उपनिषद् ही प्रमाण हैं। अर्थात केवल उपनिषद् से उस तत्व का साक्षात्कार होता है।

अङ्कारं करुणैकरूपममलं कारुण्यपूर्णेक्षणं।
कर्पूर प्रचुरोत्थचूर्ण विमलं कर्पूर सम्पादकम् ॥
कामाकाम विभीति भीति कृपिका सिन्धूरसोद्धूलनं।
सिन्धूद्भूतरसातले शमनिशं विष्णुं भजे सुन्दरम् ॥(३)

एक करुण स्वरूप रागद्वेशादि मल से रहित, करुणा से पूर्ण दृष्टि वाले, शुद्ध सत्व गुण वाला होने से कर्पूर प्रचुर से उत्पन्न चूर्ण के समान निर्मल और ज्ञानदीपक रूपी कर्पूर को समुत्पन्न करने वाले। क्षुद्र विषम और उसके साधन में काम, परम पुरुषार्थ और उसके साधन में अकाम, जन्ममृत्यु नरकादि दायक साधनों के साधक पापों से अभक्ति दान यज्ञ तप आदि सन्यास भैक्षचर्या श्रवण मनन आदि से भीति: लाभ कृपणता आदि दोष का समूह जो संसार उसका जलकाम कर्म वासना अज्ञान को सुखाने वाले और समुद्र की कन्या लक्ष्मी, तथा पृथ्वी के स्वामी करोड़ों कामदेव से भी अधिक सुन्दर शरीर वाले अङ्कार रूप सदा विष्णु का सदा ध्यान से

सेवन करूँ।

उङ्कारं पिशिताशनाशकरणं पीयूषपानारतं।
पीयूष प्रदवित्तनाथभजितं पीयूषकर्तुस्त्सवम् ॥
वेद्यं वेदविभाग भूसुर कृपासंयुक्त विद्वज्जनैः।
कार्याकार विचारदं विधिमहं ब्रह्माणमाद्यं भजे ॥ (४)

कर्म, उपासना, ज्ञानकाण्ड रूप जो वेद उसमें जो क
काण्ड रूप विभाग है। उसमें दान के यन्त्र जो ब्राह्मण उन
भूमि, अन्न, गो, सोना आदि को सदा यज्ञों में देने वाले
कर्मठ विद्वान हैं उससे उपासित कार्य्य अकार्य्य विचार
दाता मांसादि भक्षण करने वालों को नाश करने वाले सत्क
करने वालों को स्वर्ग भोग रूप अमृत के दाता देवता त
धन दाता कुबेर से सेवित, पियूष के करने वाले क्षीर साग
को चन्द्रमा रूप से आनन्द दाता अथवा यज्ञादि के कर
वाले कर्मठों द्वारा पीयूष के करने वालों को आनन्द देने वा
उङ्कर रूप ब्रह्मा का मैं ध्यान रूप से भजन करता हूँ।

मङ्कारं मितिमानमेयविधुरं मेयं सदावेदिभि-
र्मन्दोत्साहमशेष जन्तु कृपणं मन्दान्धकारापहम् ॥
मन्दामन्दममत्सरं करुणिकाकान्तं शिवं शङ्करं !
कर्पूरस्फटिकाभकान्तिकलितं कर्णान्त्रवेशं भजे ॥ (५)

साधन चतुष्टय सम्पन्न श्रवण मनन आदि में तत्पर
अधिकारियों के श्रोत्रों में आनन्द उत्पन्न करने वाली जो

उपनिषद् से प्राप्त होने वाली ब्रह्म विद्या रूप उमा है, उसके स्वामी और कर्पूरस्फटिक की कान्ति के समान कान्ति से शोभित तथा ब्रह्म विद्या से जानने योग्य, प्रयाता प्रमाण प्रमेय से रहित, अज्ञानियों के अज्ञान रूपी अन्धकार के नाशक, मन्द उत्साह वाले पुरुषों के अज्ञान को न दूर करके कर्म फल के दाता, अज्ञानी तथा ज्ञानी स्वरूप स्वयं होने से किसी से मत्सर नहीं करने वाले, मकार रूप शिवशंकर का मैं ध्यान रूप से भजन करता हूँ।

बिन्दुं बिन्दुशतैकधारमनिशं बिन्दूद्भवं बिन्दुगं ।
बिन्दुब्रह्मविशेषशोभनमतिव्याप्तदेहं शुभम् ॥
नित्यानित्यविवेकवस्तुसहितं कर्मातिदूरस्थितं ।
कार्योद्वर्त्तनकर्मदेशविवरं सौपुप्तिकं तं भजे (६)

सब प्रपञ्च के विचित्रता का कारण विचित्र वासना बिन्दु शत शब्द से कही जाती है। वे वासना ही प्राण माया के अनपत्र होने से उनसे उपहित ब्रह्म बिन्दु शतैक धार है। वही ब्रह्म वासना बिन्दु का समिष्ट व्यष्टि लिङ्ग स्थूल देहाकार से उत्पन्न होता है। उससे उपहित हिरण्यगर्भादि आकार से उत्पन्न होने से बिन्दूद्भव हैं। सुसुप्ति प्रलय में वासना मात्र से जीव रूप से अवस्थित होने से बिन्दुग है और जो तीनों काल में एक सा रहता है। वही ब्रह्म नित्य अनित्य वस्तु विवेक के सहित कर्म से दूर स्थित है। श्रवण आदि से सब कार्य का निवर्तक असङ्ग अकर्तृ कूटस्थ आत्म का विचारक मन का

और सब कर्म का उत्पादक प्रण का आकाश के समान असङ्ग आधार भूत होता हुआ अपने तत्व के बोध से माया के सहित वासना निवृत्ति होने पर सभी देहों तथा वासना से रहित शोभित निरतिशय आनन्द स्वरूप सब के कारण ईश्वर रूप बिन्दु को भजता हूँ।

नादं नादितशास्त्रवृन्दधरणं शास्त्रैकवेद्यं शुभं।
शास्त्राचार्यादिकृपालुपादरसिकैः साक्षात्कृतं सर्वदा ॥
शास्त्रं शासनरूपदिव्यममलं प्रोत्साहनोद्दण्डनं।
शब्दब्रह्म निरस्तदोषममलं नित्योत्सवेशं भजे (७)

निरावरण निरतिशय आनन्द उत्पन्न करने वाला माया के स्वामी, अतएव सम्पूर्ण आवरण विक्षेप दोष रहित और कर्म वासना आदि मल से रहित। वही परा रूप नाद ब्रह्म पश्यन्ती मध्यमा वैखरी क्रम से वेदादि विद्या के रूप से प्रगट शास्त्र है और वही शासन रूप से कर्म उपासना ज्ञान रूप से प्रकाशित है। अविद्या आदि मल से रहित होने से निर्मल है। वह केवल शासन रूप ही शास्त्र नहीं है किन्तु विहित ज्योतिष्टोमादि कर्म से पुरुष की प्रवृत्ति के लिए स्वर्गादि रूप विचित्र फल का वर्णन करते हुये जीवों को उत्साह का वर्द्धक तथा निषिद्ध कलञ्ज भक्षण ब्रह्म इत्यादि में प्रवृत्त जीवों को यम का भय तथा नरकपात शूकरादि योनि प्राप्त रूप दण्ड का प्रवर्तक है। जो सब शास्त्रों से वर्णित है तथा शास्त्र ज्ञाता गुरुओं के द्वारा साधन चतुष्टय सम्पन्न पुरुषों से साक्षात्कार

किया नाद ब्रह्म को भजता हूँ।

शक्तिं शक्तिनिराममीशनिलयं विश्वस्य निर्भेदकं।
विश्वोत्पत्तिविनाशजीवनकरं विश्वाभिधं शाश्वतम् ॥
विश्वत्राणपरायणं विमलसन्मानुष्यचित्तस्थितं सत्यं ।
नित्यमशेषजन्तुविबुधं चोङ्कारमाद्यं भजे (८)

वह शक्ति स्वरूप ओंकार भोग आसक्तों के लिए कर्म काण्ड रूप से प्रवृत्ति शक्ति रूप विश्व में व्याप्त होता हुआ विश्व की उत्पत्ति पालन नाश करने वाला विश्व नाम वाला ही है। मुमुक्षुओं को तो ईश निलय विश्वेश्वर चिदात्मनिष्ठ होता हुआ जगत का बीज माया शक्ति के निराश से कार्य्य रूप विश्व का नाशक है। अतएव सर्व प्राणियों को फल देने के लिए सम्पूर्ण जीवों को जानने वाला है। विश्व की रक्षा में उस उसके अनुरूप से परायण होता हुआ मनुष्य के उपास्य रूप से और ज्ञेय रूप से चित्त में स्थित परमार्थ रूप से सत्य आर परारूप नादात्मक शब्द ब्रह्म को कारणी भूत कुण्डलिनी रूप शक्ति स्वरूप ओंकार का मैं ध्यान रूप से भजता हूँ।

अर्द्धमात्राममात्रां च देवतां विजनोज्वलाम् ।
ॐकाररूपिणीं देवीं नित्यं वन्दे मुनिर्मलाम् (९)

इस प्रकार विद्या शक्ति का फल जीवन्मुक्ति में जेल वत्‌ के समान जगत् को ...

अनुसन्धान में साभास के अर्ध के समान अवशिष्ट ब्रह्मचिन् देवता को प्रमाणित करने वाली शक्ति अर्द्ध मात्रा है। अतएव द्वैत के न उत्पन्न करने से उसका कारण अविद्या के निरसन करने से उज्ज्वल है। उस प्रकार को निर्मल ऊँकार रूपणी देवी को मैं वन्दना करता हूँ।

कलावन्तं कलारूपं कालाकालमकालकम्।
कल्पाकल्पविशेषज्ञं प्रणव निर्मलम्भजे (१०)

ब्रह्म चिद् ब्रह्मविद्वर, ब्रह्मविद्वरीयान, ब्रह्मविद्वरिष्ठ इन चार प्रकार के प्रसिद्ध जीवन्मुक्तों में तत्वज्ञान को दृढ़ता की तार तम्यता से प्रथम जीवन्मुक्त के अनुभव से अमात्र आदि अष्ट प्रकार की कला वाला, द्वितीय के अर्धमात्रात्मक एक कलारूप तृतीय के समाधिकाल में साक्षी रूप से सिद्ध चतुर्थ के सन्निमादय के अभाव से प्रतीत निर्मल रूप व्युत्था न दशा में द्वैत का अवभास और समाधि में अनवभास को जानने वाले प्रणव का मैं भजन करता हूँ।

शान्तं निर्मलमाकाशवामङ्मनसगोचरम्।
स्वानुभूत्यैव वेद्यं च ब्रह्मैवाहमिति स्मरेत् (११)

शान्त निर्मल आकाश रूप वांणी मन का अविषय स्वानुभव से जानने योग्य ब्रह्म में ही हूँ। ऐसा स्मरण करे। यही नवमी मात्रा शान्ति नाम वाली है।

ॐकाराक्षरमालिकामन्त्रं यः पठते मतिः।
ऐन्द्रं सारस्वतं प्राप्य शाश्वतं पदमश्नुते (१२)

ऊँकाराक्षर मालिका मन्त्र को जो यति पढ़ता है। वह ईश्वर के ऐश्वर्य के ऐश्वर्य को प्राप्त करता है तथा सरस्वती के पाण्डित्य सर्वज्ञता को प्राप्त करता है और तत्व ज्ञान द्वारा मोक्ष को प्राप्त करता है।

॥ इति प्रणवाक्षर माला मन्त्रः ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रणवब्रह्मणो द्विजः ! ।
अनुस्मृतिं मोक्षदात्रीं स्मृत्वा यान्त्यपुनर्जनिम् ॥ (१)

हे ब्राह्मणों अब मैं प्रणव ब्रह्म की मोक्ष द्वापी अनुस्मृति को कहूंगा जिसका स्मरण करके पुनः जन्म को नहीं प्राप्त होंगे।

अग्रे सृष्टेः प्रपञ्चस्य य आस्ते वटबीजवत् ।
सर्वभूतमयो दिव्यः प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (२)

संसार को आपत्ति के पूर्व जो वट के बीज के समान पूर्व रूप थापति उस सर्व भूत स्वरूप दिव्य प्रणव का स्मरण करै।

यथा रज्जुरहेर्विप्रा ! विश्वस्यापि तथा नवः ।
आधारोऽतो विभिन्नस्तं प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (३)

हे ब्राह्मणों जैसे सर्व का अधिष्ठान रज्जु है। तैसे ही विश्व का अधिष्ठान प्रणव है। अतएव विश्व से भिन्न है। उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करै।

यद्विवर्त्तः प्रपञ्चोऽयं येन जीवति सर्वतः ।
यद्ध्यानान्नाशमायाति प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (४)

यह संसार जिसका विवर्त है। जिससे यह जीता है जिसके ध्यान से नाश होता है। उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करै।

उपादानं महादिव्यं यमाहुर्मुग्धमानसाः।
निष्कलं विभुमात्मानं प्रणवं संस्मरेद्यतिः॥ (५)

मूढ़ मन वाले जिसको उपादान कहते हैं। उस म प्रकाश स्वरूप निष्कल विभु आत्म स्वरूप प्रणव का अच्छे प्रकार से सन्यासी स्मरण करैं।

गायत्रीं सम्परित्यज्य यं जपन्ति यतीश्वराः।
साक्षान्मोक्षस्वरूपं तं प्रणवं संस्मरेद्यतिः॥ (६)

गायत्री का परित्याग करके जिसका जप यतीश्वर करते हैं। उस साक्षात मोक्ष स्वरूप प्रणव का सन्यासि स्मरण करैं।

गायत्र्यादिक्षुद्रमन्त्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम्।
यत्प्रभावमहाम्भोधेः प्रणवं संस्मरेद्यतिः॥ (७)

जिसके प्रभाव रूपी महा समुद्र के सामने गायत्री आदि क्षुद्र मन्त्र सोलहवीं कला के बराबर नहीं है। उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करै।

यस्मादृते न चेदं स्यादृते रज्जुं यथा फणी।
यत्सत्तातो जगत्सत्ता प्रणवं संस्मरेद्यतिः॥ (८)

जैसे रज्जु के बिना सर्प नहीं ऐसे ही जिसके बिना

जगत नहीं रह सकता जिसकी सत्ता से जगत की सत्ता है। उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करे।

साक्षात्कृत्य यमात्मानं न पश्यन्ति यतीश्वराः।
जीवभेदं विश्वभेदं प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (९)

यतीश्वर जिस आत्म का साक्षात करके जीव भेद विश्व भेद को नहीं देखते उस प्रणव का यती स्मरण करै।

अनादि प्राप्तकर्माणि शिखासूत्रादि कान्यपि।
यस्मै त्यजन्ति सावित्रीं प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (१०)

अनादि काल से प्राप्त कर्म तथा शिखासूत्र आदि का भी और गायत्री को त्याग जिस मोक्ष रूप की प्राप्ति के लिए करते हैं उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करें।

यत्र प्रतिष्ठितो विप्राः! सर्व वेद समन्वयः।
तात्पर्येण न चान्यत्र प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (११)

हे ब्राह्मणों! जिसमें तात्पर्य से सब वेद का समन्वय है। और अन्य में नहीं उस प्रणव का स्मरण सन्यासी करें।

स्वस्वाभिमतमार्गेण यं वदन्ति विवादिनः।
जगदादिमनादिं तं प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (१२)

अपने अपने मत अनुसार विवाद करने वाले वादी जिसको जगत का आदि कारण मानते हैं। उस प्रणव का सन्यासी स्मरण करैं।

वेदा वदन्ति येनैक्यं यस्य जीवस्य नो भिदा।

जीवो यो यत्परं ब्रह्म प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (१३)

जिस प्रणव ब्रह्म के साथ जीव की एकता का कथन वे महा वाक्यों द्वारा करते हैं। उपाधि के परित्याग करने पर जिस जीव का कोई भेद नहीं। जो अज्ञान दशा में भ्रान्ति से जीव है। वही ज्ञान दशा में परब्रह्म रूप है। उस प्रणव का सन्यासी स्मरण करै।

श्रुतिस्मृतिभ्यांविहितो यदैक्यज्ञान सिद्धये।
गायत्र्यादि परित्यागः प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (१४)

जिसके एकता रूप ज्ञान की सिद्धि के लिये मुमुक्षु के लिए गायत्र्यादि सब वेद और कर्म धन पुत्र कलत्र वित्त आदि के त्याग का विधान है। उस परब्रह्म प्रणव का सन्यासी स्मरण करै।

ब्रह्मविष्णवादिभेदेन यो भाति जगतां पतिः।
ब्रह्मादयो यं जपन्ति प्रणवं संस्मरेद्यतिः ॥ (१५)

जो जगत का पति ब्रह्म विष्णु आदि भेद से प्रतीत हो रहा है। ब्रह्मादिक जिसका जप करते हैं। उस प्रणव रूप ब्रह्म का सन्यासी स्मरण करै।

य इमामनुसन्धत्ते यतिर्नित्यमनुस्मृतिम्।
ऐन्द्रं सारस्वतं प्राप्य शाश्वतं फलमश्नुते ॥ (१६)

जो सन्यासी इस अनुस्मृति का नित्य अनुसंधान करता है। वह ईश्वर सम्बन्धि सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्त करके सब

शास्त्र तथा उसके ज्ञान को प्राप्त कर नित्य निरतिशय आनन्द रूप मोक्ष को पाता है।

अनुस्मृतिं महादेव्यै इत्येवं शम्भुरब्रवीत् (१७)

इस प्रकार शंकर जी ने पार्वती जी को इस प्रणव की अनुस्मृति को कहा।

॥ इति प्रणवानुस्मृति ॥

ॐकारजज्ञपूकानां जप्यान्यङ्गानि सर्वशः।

सूतेन सम्यगुक्तानि ईश्वरेणैव पार्वतीम् (१)

पूर्वोक्त अङ्ग स्तुति से लेकर अनुस्मृति तक प्रणव उपासना के अङ्ग को शंकर जी ने पार्वती जी से कहा और सूत जी ने शौनक आदि मुनियों से कहा है। अतएव ॐकार के जपने वालों को उनको अवश्य जपना चाहिये।

पार्वत्यङ्गानि सर्वाणि जप्त्वा दिव्यानि सर्वशः।

आनन्दं परमं प्रापुर्यथैते मुनिसत्तमाः (२)

हे पार्वती पूर्वोक्त इन सभी दिव्य अङ्गों को शौनकादि मुनियों ने सब प्रकार से प्रणव का जप करके परम आनन्द को प्राप्त किया।

श्रुत्वेदं मुनिशार्दूलाः सन्तोषमतुलं ययुः।

केचित्सूतं प्रशंसन्ति चक्रुरालिङ्गनं परे (३)

इसको सुनकर के श्रेष्ठ मुनियों को अतुलनीय सन्तोष प्राप्त हुआ। कोई सूत की प्रसंसा करते हैं, कोई आलिंगन

करते हैं।

मेनिरे केचिदेतेन तुल्यो नास्तीति सर्वशः ।

केचिद्व्यासस्य माहात्म्यमिदमित्याहुरादरात् (४)

कोई इसके तुल्य अन्य नहीं है। ऐसा माना कोई व्यास जी का यह महात्म्य है ऐसा आदर से कहा।

अन्येऽप्योङ्काररूपेण निश्चिन्वन्ति स्म सूतकम् (५)

अन्य लोग सूत जी को ओंकार रूप से निश्चय करते हैं। अर्थात ये सूत जी ओंकार रूप ही हैं।

पठंतु शृण्वन्तु च वाचयंतु लिखंतु गायंतु च बोधयंतु।

ॐकारकल्पं यतिवृन्दसेव्यं सूतोक्तमीशोक्तमनिन्दितं च॥

इसका अर्थ पीछे कर आये हैं।

इति श्री स्कन्द पुराणे वैष्णव संहितायां मन्त्र प्रस्तावे प्रणव कल्पे तृतीयोऽध्यायः।

प्रणवः परमं ब्रह्म प्रणवः परमः शिवः ।

प्रणवो परमो विष्णुः प्रणवः सर्वदेवताः (१)

इसका अर्थ पीछे कर आये हैं।

पुरश्चर्यां चरित्वा तु पार्वती जप्तृनायिका ।

अलभिष्ट महानन्दमित्यवोचद्भवान्किल ॥ (२)

प्रणव के पुरश्चरण को करके जपने वालों की नायिका पार्वती ने महा आनन्द को प्राप्त किया, यह आपने कहा।

कथं प्राप महानन्दं पार्वती तां विधां वद ।
आनन्दं कीदृशं प्राप कथं प्राप्नोति वा वद ॥ (३)

पार्वती ने कैसे आनन्द प्राप्त किया उस विधि को कहो और किस प्रकार का आनन्द है और कैसे प्राप्त किया जाता है, उसको बताइये।

इत्युक्तो मुनिभिः सूतस्तं प्रकारमभाषत ।

इस प्रकार मुनियों से पूछने पर सूत जी ने उस विधि को कहा।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यतीनां मुक्तिदायिनी ॥ (४)

सूत जी से बोले अतएव अब मैं सन्यासियों को मुक्ति देने वाली विधि बताऊँगा।

ॐकारगीता या गीता गीता मुक्ति प्रयच्छति ।
जेगीयतां गीयमाना गायतस्त्रायते सदा ॥ (५)

जो ओंकार गीता गई मुक्ति को देती है। उसको बार बार गाओ क्योंकि वह गाने हुए पुरुषकी सदा रक्षा करती है।

कदाचिदीश्वरी गौरी विजने शुचिबुद्धिदे ।
गुहायां हैमवत्यां च ध्यायन्ती ब्रह्म तारकम् (६)

किसी ईश्वरी पार्वती एकान्त जन रहित पवित्र बुद्धि को बढ़ाने वाली हिमालय की गुफा में तारक ब्रह्म रूप, प्रणव रूप का ध्यान करती हुई।

निर्गुणं स्वात्मरूपेण तिष्ठति स्म सदा शुचिः ।
ध्यायं ध्यायं संस्थिताया प्रणवं ध्यानचेतसः (७)

बार बार ध्यान करके जिसका चित्र ध्यान में आसक्त था उनके शुद्धब्रह्म आविर्भूत होने से उसके रूप से स्थित हुई।

विश्वं ब्रह्ममयं सर्वमभिन्नं निर्विभेदकम् ।
पश्यन्त्यास्तत्र पार्वत्या आविरास महन्महः (८)

उस स्थान में सब संसार अपने से अभिन्न ब्रह्मरू होगया। अतएव भेद से रहित देखती हुई पार्वती के हृद में प्रणव रूप महज्योति आविर्भूत हुई।

सर्वत्रगं सर्वरूपं निर्मलं निरुपद्रवम् ।
सत्यं ज्ञानमनन्तं च मनोवाचामगोचरम् (९)

वह सर्व व्यापक सर्व रूप निर्मल उपद्रव रहित सत्य ज्ञान अनन्त मन वाणी और इन्द्रियों का अविषय।

अद्वैतं मोक्षरूपञ्च प्रत्यगूपमभेयकम् ।
चिद्रूपमंशहीनं च जीवेशादिभिदापहम् (१०)

अद्वैत मोक्ष रूप अन्तः स्वरूप अप्रमेय अंश रहित चेतन रूप जीव ईश्वर भेद आदि को नाश करने वाला।

प्रपंचे दृश्यमाना ये पदार्था मानुषादयः ।
सुरासुरप्रभृतयो भेददर्शनगोचरः (११)
तस्यां दशायां रुद्राण्या न दृष्टिपथमागताः ।
यथा पश्यन्ति नानार्थानविद्याग्रस्तचेतसः (१२)

जो मनुष्य आदि देवता असुर आदि पदार्थ प्रपञ्च में प्रतीत होरहे हैं। वह उस दशा में पार्वती जी की दृष्टि में नहीं आये। जैसा कि अविद्या से ग्रस्त चित्त वाले अनेक पदार्थों को देखते हैं।

जीवोऽन्य ईश्वरोऽप्यन्य इत्येवं ध्वस्तदृष्टयः।
विदेहमुक्तिवेलायां जीवन्मुक्तौ च तापसाः (१३)
ध्यानकाले स्थितिर्यादृक् तादृगेव स्थितिः सदा।
भर्तृभार्यादिसम्भेदो गुरुशिष्यादिभिन्नता (१४)
वेदशास्त्रादिभेदो वा तदा नो भाति किंचन।
एतन्निदानमज्ञानं यतो नष्टं विवेकतः (१५)

ईश्वर अन्य है, जीव अन्य है। इत्यादि भेद, बुद्धि जिसकी नष्ट हो गई है। उसकी जीवन मुक्ति दशा में या विदेह दशा में अथवा ध्यान के समय जैसी स्थिति रहती है। वैसी सदा रहती है। भाई भावी का भेद, गुरु शिष्य का भेद, वेद शास्त्र का भेद उस समय कुछ नहीं रहता है. क्योंकि भेद का कारण अज्ञान ज्ञान से नष्ट हो गया।

मृद्विनाशे घटो यद्वद्रज्जुनाशे यथा फणी।
एतस्मिन्नेव काले तु प्रादुरास शुचिश्रवाः (१६)
लोकोपकारकाराय दिव्या वागशरीरिणी।

जैसे मिट्टी के नाश होने पर घट का नाश होता है और रस्सी के नाश होने पर सांप का नाश होता है। इसी

ही समय कान को पवित्र करने वाली लोगो के उपकार के लिए दिव्य आकाश वाणी उत्पन्न हुई।

भो भो देवि ! कृतार्थाऽसि गुरुकारुण्यलेशतः (१७)

हे हे देवि ! गुरू की लेश मात्र करुणा से कृतार्थ हो अब तुमको कोई कर्तव्य नहीं है।

नष्टाज्ञाना नष्टकार्या नष्टजीवादिभेदिमा।
नष्टकामादिदौर्गुण्या असि त्वं परमेश्वरि (१८)

अज्ञान और उसका कार्य जीव ईश्वर आदि नष्ट हो गये और काम आदि दुर्गुण नष्ट हो गये जिसके, ऐसी हे परमेश्वरी तुम हो।

मज्जपप्रभवादेवं प्रादुरास महन्महः।
एवंप्रभावो मज्जपा तस्मान्मामेव सञ्जपेत् (१९)

मेरे जप के प्रभाव से इस प्रकार महा तेज प्रादुर्भूत हुआ। हमारा जप करने वाला इस प्रकार प्रभाव वाला होता है। अतएव हमारा ही जप करै।

यतीश्वराश्च गायत्रीं त्यक्त्वा भेदावलम्बनम्।
मामेव सर्वदा शुद्धा जपन्त्यालोचयन्ति च (२०)

यतीश्वर लोग भेद का अवलम्बन करने वाली गायत्री का त्याग करके सदा शुद्ध होकर सदा हमारा ही जप करते हैं। और विचार करते हैं।

मदर्थं चापि मामेव सर्वभेदविनाकृतम्।

गायत्रीमपि सावित्रीं शिखां सूत्रं च कर्म च (२१)
त्यक्त्वा संन्यस्य जप्योऽहं मोक्षवाच्छा भवेद्यदि ।

हमारे मन का विचार करते हैं। और सर्व भेद रहित हमको ही ढूढते हैं। अतएव गायत्री सावित्री शिखा यज्ञोपवीत कर्म को त्याग कर हमारा जप करते हैं। यदि मुक्ति की इच्छा हो तो हमारा ही सदा जप करना चाहिये।

इदं कल्पं तु सर्वेषां गृहिणां ब्रह्मचारिणाम् (२२)
वनस्थानां यतीनां च पारायणफलं समम् ।
सकमण्डलुदण्डानां यतीनामेव मज्जपः (२३)

यह कल्प ब्रह्मचारी ग्रहस्थ बनस्थ सबके लिए समान है किन्तु कमण्डलु के सहित सन्यासियों के लिये तो हमारा ही जप है।

कल्पं साधारणं प्रोक्तं पुराणत्वेन हेतुना ।
सर्वं च मन्मयं देवि ! विश्वस्माच्च विलक्षणः (२४)

पुराणत्व होने से इसमें सबका अधिकार है। हे सर्व सब मेरा स्वरूप है। और मैं सबसे बिलक्षण हूँ।

निर्गुणो निर्विकारोऽहं तद्रूपः सर्वरूपवान् ।
मत्तोत्पन्नं च यत्किञ्चित्सर्वं च मयि कल्पितम् (२५)

मैं निर्गुण निर्विकार हूँ। और ब्रह्म विद्या रूप हूँ सब रूप वाला हूँ। मुझसे उत्पन्न जो कुछ है वह मुझसे कल्पित है।

अहमेव विलासेन बद्धो मुक्तश्च सर्वगः ।
मायावीव स्वयं सर्वं सृष्ट्वा तत्र प्रविश्य च (२६)
संसरामि भ्रमामीव गच्छामीव नमामि च ।
मूढानां च तथा भामि न गुर्वायत्तचेतसाम् (२७)

मैं ही माया के विलास से जब तक अज्ञान है तब तक बद्ध के समान, अपने आत्म तत्व को जानकर मुक्त के समान अपने आप सबको रचकर अपने रचे हुये शरीरों में प्रविष्ट हुआ संवादि विषयों में संसरण करता हुआ, विसवादि विषयों में भ्रमण करता हुआ। मार्ग भेदों में चलता हुआ और नमन करता हुआ सा प्रतीत कर रहा हूँ। किन्तु मूर्खों को वैसा प्रतीत होता हूँ। जिसके ऊपर गुरु की कृपा हो गई है। जिसका मन गुरु के आधीन है उनको वैसा प्रतीत नहीं होता।

इदं भ्रान्तं जगद्यस्तु पश्यत्येष स पश्यति ।
लोकभेदं समुद्दिश्य वक्तृता प्रतिवक्तृता (२८)

जो जीव इस भ्रान्त जगत को देखता है। वही यह पहिले कहा गया मैं जीव होकर देखता हूँ। क्योंकि दूसरा देखने वाला नही है। इसी प्रकार गुरु शिष्यादि लौकिक भेद की कल्पना से एक प्रश्नकर्त्ता और दूसरा उत्तरदाता होता है।

देवि ! केनोपनिषदि एवं संवादिकोमया ।
इन्द्रादिना पुरा जातो गर्वनिर्वापणाय वै (२९)

हे देवि ! मैं पूर्व समय में मेरी शक्तिसे असुरों से विजय

प्राप्ति के अनन्तर इन्द्रादि देवताओं को मेरी विजय है। मेरी महिमा है। ऐसा गर्व होगया, तब उनके गर्व को शान्त करने के लिए यक्ष रूप से प्रगट होकर उनकी असमर्थता को प्रगट कर पुनः छिपकर उमा रूप से प्रकट होकर इन्द्र के साथ संवाद करके उनके अहंकार को दूर करने के लिये प्रगट हुआ था।

पारमार्थिकदृष्टौ तु नैवं पर्युपपद्यते।
एतादृशं स्वरूपं त्वं लक्ष्यसे देहपाततः (३०)

पारमार्थिक दर्शन की अवस्था में इस प्रकार प्रश्न और उत्तर उत्पन्न नहीं होता। शरीर के बाध के बाद इस प्रकार के रूप को तुम लक्षित करोगी।

एवमेव हि यो वेद लभते सोऽपि मां शिवम्।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मदर्थं प्रविचारयेत् (३१)

क्योंकि इस अवसर पर जो जानता है। वह मुझ प्रणव रूप शिव को जानता है। जिस कारण सब प्रकार से मेरे अर्थ का विचार करै।

श्रुण्वीत चापि मन्वीत निदिध्यासनमाचरेत्।
मदर्थो यत्र विस्तारो वर्णितो बुधसत्तमैः (३२)

प्रथम गुरु मुख से सुनै पुनः उसकी दृढ़ता के लिए मनन करै पुनः विपरीत भावना के नाश के लिए निदिध्यासन करै जिन जिन ग्रन्थों में श्रेष्ठ बुद्धि मानों ने हमारे स्वरूप का विस्तार से वर्णन किया है। उनका श्रवण मनन निदिध्यास करै।

सद्भावो यस्य पुंसोऽस्ति तस्यावस्थात्रयं भवेत् ।
जीवन्मुक्तिर्ध्यानकाले देहपाते विशेषतः (३३)

जिस पुरुष को अपनी सत्ता से सद्भाव है। उसी के जीवन पर्यन्त तीन अवस्था होती है। ध्यान के समय अपरोक्ष रूप से आत्म साक्षात्कार होने से जीवन्मुक्ति भी होती है। शरीर छूटने के बाद विदेह मुक्ति होती है। अत्यन्त असत के नहीं।

न तस्य जन्म दुःखं वा भेदो वा सम्भवत्युमे ।
मुह्यन्ति मूढाः सर्वत्र गुरुशास्त्रपराङ्मुखाः (३४)

अतएव असङ्ग पुरुष को जन्म दुःख भेद नहीं होता। जो लोग गुरु शास्त्र से विमुख हैं वे ही मोहित होते हैं।

अन्यो जीवस्तथा ब्रह्म प्रपञ्चोऽन्य इतीश्वरि ।
नैव पश्यन्ति सच्चित्ता यतो ब्रह्माद्वयं स्मृतम् (३५)

हे ईश्वर ! जीव अन्य है ब्रह्म प्रपञ्च अन्य है। इसको सत में चित्त लगाने वाले नहीं देखते। क्योंकि गुरू शास्त्र के उपदेश से उन्होंने अद्वैत ब्रह्म का स्मरण किया है।

सर्वोपनिषदो देवि ! गुरुवाक्यं सतां वचः ।
स्वानुभूतिर्विचारश्च प्रमाणं यदि पार्वति (३६)

अतएव सामान्य गति के परिज्ञान के लिए यदि सब उपनिषदों का विचार किया है और उनके तात्पर्य का प्रदर्शक गुरुवाक्य को सुना है और उनके अनुसार अपना अनुभव

भी किया है और उसकी दृढ़ता के लिये बार बार विचार किया है। तो यहो सब प्रमाणों से सिद्ध है कि ब्रह्म अद्वैत है।

इत्युक्त्वा विररामासौ दिव्यागमशरीरिणी।

ऐसा कह कर वह दिव्य आगम शरीर वाली वाणी विराम को प्राप्त हुई।

गौरीदं वाक्यमाकर्ण्य आश्चर्यं परमं ययौ।
वृत्तान्तमिममीशानी ज्ञापयामास शङ्करम् (३७)

इस बात को सुनकर पार्वती परम आश्चर्य को प्राप्त हुई और इस वृत्तान्त को शंकर जी को बताया।

श्रुत्वा वाक्यं तथा शम्भुः सन्तोषं परमं ययौ।
निश्चयामासतुर्विप्राः! तथेति गिरिजाशिवौ (३८)

शंकर जी पार्वती की उस बात को सुनकर परम सन्तोष को प्राप्त हुए। हे ब्राह्मणो शंकर पार्वती ने वैसा ही निश्चय किया।

कुर्वाते प्रत्यहं ध्यानं प्रणवब्रह्मणः शिवौ।
तस्माज्जपन्तु चोङ्कारं साङ्गम् तु मुनिसत्तमाः (३९)

शिव पार्वती प्रति दिन प्रणव ब्रह्म का जप और ध्यान करते हैं। जिस कारण हे मुनिसत्तम अङ्ग के सहित प्रणव का जप आप लोग भी कीजिये।

त्रिकरण्या च गायत्रीं पित्रा मूढेन देशिताम्।
त्यक्त्वा सर्वगुरुणा दिष्टं वाञ्जपन्तु च (४०)

अनात्म यज्ञ पिता से या आचार्य्य से उपदेश की गई वाणी मन शरीर रूपी तीन कारण वाली गायत्री का त्याग करके सर्वज्ञ गुरू के द्वारा उपदिष्ट प्रणव का जप करे।

यतिर्गायत्रीजपिता बट्वाद्यास्तारजापकाः।
मन्त्रजाप्यश्च नार्यश्च सर्वे निरयगामिनः (४१)

सन्यासी गायत्री का जपने वाला ब्रह्मचारी प्राप्त बनस्थ केवल प्रणव का जप करने वाले स्त्री आदि जिनके प्रणव सहित मन्त्र जपने का अधिकार नहीं है। यदि जपते हैं तो वे सभी नरक जाने वाले होते हैं।

इत्यवोचमहं गीतां दिव्यां प्रणवनामिनीम्।
यो गायति सदा शुद्धः सोऽन्ते मुक्तिं च विन्दति (४२)

इस प्रकार हमने प्रणव नाम वाली दिव्य गीता का कथन किया। इसको जो शुद्ध होकर जपता है। वह अन्त में मुक्ति को प्राप्त होता है।

पठन्तु शृण्वन्तु च वाचयंतु लिखंतु गायंतु च बोधयंतु।
ॐकारकल्पं यतिवृन्दसेव्यं सूतोक्तमीशोक्तमनिन्दितं च॥

इसका अर्थ पूर्व कर आये हैं।

॥ इति प्रणव कल्पे चतुर्थोऽध्यायः॥

प्रणवः परमं ब्रह्म प्रणवः परमः शिवः ।
प्रणवः परमो विष्णुः प्रणवः सर्व देवताः (१)

इसका अर्थ प्रथम कर दिया है।

सूत सूत महाप्राज्ञ द्वैपायन कृपालय ! ।
सत्यवत्याः सुतात्सर्वं ज्ञातं वैदिक लौकिकम् (२)

हे सूत, हे सूत, हे महा प्राज्ञ, हे व्यास की कृपा के निवास स्थान ? सत्यवती के पुत्र व्याससे वैदिक, लौकिक सभी रहस्यों को जाना है।

अस्माकं कृपया पूर्वमोङ्कार कवचं शुभम् ।
ॐकार हृदयं पुण्यमोङ्काराङ्गस्तुतिस्तथा (३)
ॐकारनाम्नां दिव्यानां शतमष्टोत्तरं मुने ! ।
ॐकार पञ्जरादीनि सर्वाण्युक्तानि भो ! त्वया (४)

हम पर कृपा करके प्रथम शुभ ओंकार कवच ॐकार हृदय पुण्य ओंकार अङ्ग स्तुति, ओंकार के अष्टोत्तर शतनाम और ओंकार पञ्जर आदि हे मुनि तुमने सबका कथन किया।

श्रुत्वैतानि मुनिश्रेष्ठैर्लब्धं कार्त्तार्थ्यमुत्तमम् ।
वाच्यं श्राव्यं पुनः किञ्चिदस्ति नो वद तत्प्रभो ! (५)

इस सबको सुनकर श्रेष्ठ मुनियों से प्राप्त उत्तम कृतार्थता को प्राप्त किया। अब आपसे कहने योग्य और हमसे सुनने योग्य जो कुछ हो हे प्रभू उसको कहिये।

यच्छ्रुत्वा मुनिर्धार्येय । श्राव्यं लोके न विद्यते ।
ॐकारनाम्नां साहस्रं भुक्तिमुक्ति फल प्रदम् (६)

हे मुनि श्रेष्ठ जिसको सुनकर इस लोक में सुनने योग्य नहीं है। उस ओंकार सहस्र नाम को सुनाइए जो भाग मोक्ष का दाता है।

नानारोगहरं नृणां नानाकामार्थदायकम् ।
नानाश्रमफलाकारं नानास्तोत्रफलप्रदम् (७)

वह अनक रोग को हरने वाला अनेक काम और अर्थ का दाता है। अनेक आश्रम के फल स्वरूप है। अनेक स्तोत्र के फल का दाता है।

अस्मभ्यं वद लोकानां हितं कर्त्तु महामते !
सकृच्छ्रुत्वा पठित्वा वा पुनर्जन्म न विद्यते (८)

हे महामति लोकों के हित करने के लिए हमारे लिए कहिये जिसको एक वार सुन पढ़कर पुनर्जन्म नहीं होता।

भो भो हे मुनयः श्रेष्ठाः ! साधु पृष्टं महात्मभिः ।
यथा शम्भुः पुरा गौर्या मेघगम्भीरया गिरा (९)

हे हे मुनि श्रेष्ठ आप महात्माओं ने अच्छा प्रश्न किया है। जैसा प्रश्न प्रथम पार्वती ने शङ्कर जी से किया था। वैसा ही मेघ के समान गम्भीर वाणी से प्रश्न किया है।

प्रश्नेनानेन तुलया न पृष्टं केनचित्पुरा ।
अतो वक्ष्यामि युष्मभ्यं यतो मुक्तिर्भवेद्ध्रुवम् (१०)

इस प्रश्न के समान पहिले किसी ने नहीं पूछा था। अतएव आप लोगों से कहूँगा। जिससे निश्चय ही मुक्ति होगी।

इत्युक्त्वा वक्तुमारेभे सूतः पौराणिकः प्रभुः।

इस प्रकार कहकर समर्थ पौराणिक सूत ने कहना प्रारम्भ किया।

ॐ अस्य श्रीप्रणवदिव्यसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य परब्रह्मऋषिः, अनुष्टुपछन्दः, परमात्मा देवता, अकारो बीजम्, उकारः शक्तिः, मकारः कीलकं, मोक्षार्थे जपे विनियोगः।

इस श्री प्रणव दिव्य सहस्र नाम स्तोत्र मन्त्र के परब्रह्म ऋषि हैं अनुष्टुपछन्द है, परमात्मा देवता है, अकार बीज है, उकार शक्ति है, मकार कीलक है, मोक्ष के लिए जप में विनियोग है।

अकारोकारमकारैर्न्यासं कुर्यात्करादिषु। अष्टोत्तर-नामवद्द्रष्टव्यम्।

अकार, उकार, मकार से करादि में न्यास करे। अष्टोत्तर शत नाम की तरह जानना चाहिये।

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐकारं निगमैकवेद्यमनिशं वेदान्ततत्त्वास्पदम्।
चोत्पत्तिस्थितिनाशहेतुममलं विश्वस्य विश्वात्मकम्॥
विश्वत्राणपरायणं श्रुतिशतैः सम्प्रोच्यमानप्रभम्।
सत्यं ज्ञानमनन्तमूर्तिममलं शुद्धात्मकं तं भजे (११)

सब वेद वेदान्त से एक जानने योग्य, वेदान्त तत्त्व प ब्रह्म का वाचक और प्रतीक होने से आस्पद, अज्ञान का अन्धकार का विरोधी होने से अनिश संसार की उत्पत्ति स्थिति, नाश का हेतु, निर्मल विश्व रूप समस्त विश्व की रक्षा में परायण अनेक श्रुतियों से कही जारही प्रभा ब्रह्म और सत्य ज्ञान अनन्त मूर्ति निर्मल शुद्ध स्वरूप प्रणवको भजता हूं।

एवं न्यस्य ततो ध्यात्वा नामानि प्रजपेत्सुधीः।

इस प्रकार न्यास करके उसके बाद ध्यान करके बुद्धिमान जप करे।

ॐकारस्तारकं सूक्ष्मः प्रणवः सर्वगोचरः (१२)
क्षरमेकाक्षरं क्षारं क्षितिरुत्पत्तिहेतुकः।
नित्यो निरत्ययो शुद्धो निर्मलात्मा निराकृतिः (१३)

ॐकार सूक्ष्म तारक प्रणव सब को विषय करने वाला कार्य प्रपञ्च रूप से क्षर है। आत्म रूप से अक्षर है। मल का नाशक होने से क्षार है। संसार का नाश अथवा प्रतिष्ठा होने से क्षिति है। सम... [illegible]

नित्य है, शुद्ध निर्मल स्वरूप आकृति रहित है।

निराधारः सदानन्दः शाश्वतः परतः परः।
अकारात्मा मकारात्मा बिन्दुरूपी कलाधरः (१४)

आधार रहित सदा आनन्द स्वरूप, नित्य पर से पर, अकार मकार स्वरूप बिन्दु रूप कला को धारण करने वाला।

उकारात्मा महादेवो महापातक नाशनः।
ईड्यः परतरो वेद्यो वेदवेद्यो जगद्धरः (१५)

उकार रूप महा जानने योग्य महापातक नाशक स्तुति करने योग्य सबसे परे जानने योग्य वेद से जानने योग्य, जगत का धारक है।

वेदकृद्वेदवेत्ता च वेदान्तार्थ स्वरूपगः।
वेदान्तवेद्यो नतुलः कञ्जजन्मा कमाकृतिः (१६)

वेद का करने वाला, वेद का जानने वाला, वेदान्त के अर्थ स्वरूप को प्राप्त करने वाला वेदान्त से जानने योग्य, जिसकी समता किसी से नहीं। कमल से उत्पन्न ब्रह्मा सुख स्वरूप।

खरूपी खगवाही च खगः खगतरः खगः।
खाद्यः खभूतः खगतः खगमः खगनायकः (१७)

आकाश रूप हंस गरुड़ वाहन वाला, पक्षिरूप खगों में श्रेष्ठ सूर्यादि आकाश में गमन करने वाला आकाश का आदि कारण सृष्टि के आदि में स्वयं आकाश रूप वायु रूप से

आकाश में प्राप्त आकाशमें चलने वाला, आकाश में चलने वा[ले] का नायक।

खरमः खजलः खालः खगवाहः खगेश्वरः।
गन्ता गमयिता गम्यो गच्छन्गतिकरो गतिः (१८)

देवादि रूप से आकाश में रमन करने वाला, आकाश[में] मंदाकिनी और मेघादि रूप से जल वाला, आकाश को [...] आदि से भूषित करने वाला, गरुड़ रूप रथादि रूप, [...] रूप, ग्राम नगर रूप चलता हुआ गीत कारक क्रिया रूप।

मनसो गतिहन्ता च गम्यानामुत्तमोत्तमः।
घण्टानिनादो घण्टेयो घण्टेयपरनन्दनः (१९)

मन की गति को हनन करने वाला प्राप्त होने यो[ग्य] फलों में उत्तमों से उत्तम, घन्टादि नाद स्वरूप, घन्टा नाद[के] समान अनाहत रूप, अनाहत नाद से समाधि निष्टों [को] आनन्दित करने वाले।

घण्टानादकरो घण्टानादवान्नादवान् घुणः।
घस्रो घनितचिद्रूपो घनानां जलदायकः (२०)

पूजक आदि रूप से घण्टा नाद करने वाला, घण्ट[ा] रूप से प्रणव घण्टा नाद वाला, घण्टादि रूप से सब ना[द] वाला, काल रूप से सबको घुन के समान क्षीण करने से घु[न] रूप, दिन रूप से सदा प्रकाश रूप होने से घस्र, सैन्धव घन [के] समान घनित चिद्रूप, मेघों का जल दाता।

चरणापूज्यश्चिदानन्दश्चिराचिरत्नवान्तिः।

चितिदश्चितिगन्ता च चर्मवान् चलनाकृतिः (२१)

चम्पा पुष्प से पूज्य, चित आनन्द रूप, नित्य होने से पुराने से पुराना है चितिरूप, चितिरूप चरस का दाताचिति रूप से इनको प्राप्त करने वाला, शिव रूप से व्याघ्र आदि के चर्म को धारण करने वाला, चलन स्वरूप।

चञ्चलश्चालकश्चाल्यश्छायावान् छादनात्मकः।
छाया छाया प्रतिछाया जञ्जपूको महामतिः (२२)

चञ्चल रूप, चालक, चलाने योग्य छाया वाला, छादन स्वरूप, छाय कान्ति, प्रसिद्ध छाया रूप, प्रति बिम्ब रूप, जपने वाला महाबुद्धि।

जलग्राह्यो जलाकरो जाली जालविनायकः।
झटितिप्रतिधौरेयो झञ्झामारुतसेवितः (२३)

जल से ग्राह्य, जलके आकार वाला, जाल वाला त्रिगुण माया जाल का नियन्ता, शीघ्र ही सब भार वाहों प्रति हत करने वाला, अर्थात् देवादिकों से अगम्य गति का प्रापक होने प्रलय पवन सेवित।

टङ्कञ्च टङ्ककर्त्ता च टङ्ककार्यवशानुगः।
ठिट्ठलो निष्ठुरः कूष्ठमठः पृष्ठगोचरः (२४)

पाषाण को भेदन करने वाला टङ्क रूप, टङ्क कर्ता, टङ्क का कार्य शिलादि प्रति या उसमें सन्निधान करने से उसके वश से पीछे चलने वाला, शिलादि कठिन रूप, निष्ठुर, कमठ रूप, स्वपृष्ठस्थ भूमि रूप से पृष्ठ गोचर।

काठिन्यात्मा कठोरात्मा कौटः कौटीरगोचरः ।
डमरुध्वानसानन्दो डाम्भिकानां पराङ्मुखः (२५)

शिलादि रूप से काठिन्य स्वरूप, वज्रादि रूप से कठोर रूप, कुटी में होने वाला कौट, अहंर कुट को कुटीर कहते हैं उसमें रहने वाले यतियों से उपास्य रूप से प्रतीत होने वाले डमरु के शब्द के साथ नृत्य में तत्पर रहने से आनन्द सहि धर्म ध्वजियों को पराङ् मुख अर्थात धर्म ध्वजियों को नहीं प्राप्त होता ।

डम्भेतरसमाराध्यो डाम्भिकानां विडम्बनः ।
ढक्काकलकलध्वानोऽणिमाणुत्तमसुन्दरः (२६)

दम्भ से रहितों से सम्यग् आराध्य है, दांभिकों के लोक वञ्चन फल मात्र से वञ्चक है। परा रूपी ढक्का नाद से सब दिशाओं में कलकल ध्वनि जिसकी होरही है। अणिमा सिद्धि रूप, अणु से भी सूक्ष्म ।

तारतम्यफलं तल्पं तल्पशायी वितारकम् ।
तर्त्तव्यं तरणं तारं तारकानाथभूषणः (२७)

कर्मासना के तार तम्य के अनुसार फलकी तार तम्यता स्वरूप, महा प्रलय के समय सब प्राणियों की सुख निद्रा के स्थान होने से तुल्य है। शेष शैया पर शयन करने वाले संसार समुद्र से विशेष तारक संसार से पार होने पर प्राप्त होने योग्य। तरने का साधन तारने वाला, चन्द्रमा भूषण है जिसका,

हिरण्यबाहुः सेनानीर्देशानां च दिशां पतिः ।
पीतवर्णो महावृक्षो हरिकेशोपवीतवान् (२८)

हिरण्य के समान बाहु, सेनापति, देशों और दिशाओं के पति, स्वर्गादि रूप से पति वर्ण। महा वृक्ष रूप हरि केश के उपवीत वाले।

स्तायूनामग्रणीः श्रीमान्निचेरुः परिचारकः ।
बिल्मी च कवची वर्मी मत्तेभगवरूथवान् (२९)

चोरों के अगुआ, श्रीमान, निचेरु परिचायक (सेवक) बिल के समान लोह की मुद्रिका से रचित शिर त्रांण वाले, कवच को धारण करने वाले, वर्म को धारण करने वाले मतवाले हाथी पर चढ़ने वालों की सेना से रक्षित।

वञ्चकः परिवञ्ची च कर्मारः कुम्भकारकः ।
पक्षिपुञ्जोपजीवी च मृगयुः शुनको नयः (३०)

वञ्चक, परिवञ्चक, कर्म कर्त्ता, कुम्भकार पक्षि समूहों से जीवन निर्वाह करने वाला शिकारी, श्वान रूप संसार को नियमन करने वाला।

भक्त पापमहाद्राविर्दरिद्रो नील लोहितः ।
मीढ्वान्मीढुष्टमः शत्रुव्याधी च बभ्लुशः (३१)

भक्तों के पापों को विशेष रूप से दूर करने वाले स्वयं दरिद्र रूप, नील लोहित मेघादि रूप से जगत का सेचक, वही प्रकट सेवक, भक्तों का [illegible] बैल पर शयन

करने वाले।

तोकादि रक्षकः कर्त्ता खल्य ऊर्वर्य एव च।
अलाद्यनाथः सूद्यश्च हेतिसाहस्र संयुतः (३२)

बालकों के रक्षक, सबके कर्त्ता, पलाल आदि मन शो
के स्थल में होने वाले सब प्रकार से सस्य से सम्पन्न भूमि
होने वाले, जीव के अन्दर अन्तर्यामी रूप से विराजमान
वाले, और वही सबके स्वामी सुन्दर जल वाले देश में हो
वाले, सहस्रों आयुधधारी।

सृकाहस्तो महापद्मः शरव्यायुतमण्डनः।
सर्वोऽपहर्त्तुकामश्च जरित्रस्थः प्रतारकः (३३)

हाथ में शस्त्र लिये हुये, शत सहस्र धनुषसे शोभित शि
भक्तों के पाप और दुःख के हरण करने की कामना वाले जी
रूप, स्मरण करने वालों को अच्छी तरह से तारने वाले।

अन्नवाणो वातवाणो वर्षवाण कराम्बुजः।
दशप्राच्यादि वन्द्यश्च सस्पिञ्जर कलेवरः (३४)

अन्न वायु वर्षा से प्राणियों का संहारक होने से, इन
उन बाणों से युक्त हस्त कमल, दश अङ्गुली युक्त हाथ से जो
कर पूर्वादि दिशाओं में बन्दना करने योग्य, बाल तृण
समान कोमल हरित शरीर धारी। अथवा दुष्टों को क्षीण
करने वाले शरीर को धारण करने वाले—

जपैकशीलः सजप्यः समजग्धिः सपीतकः।

एमादि कुशलो गौरो दिवारात्रैक वृष्टिदः (३५)

जप करने का ही एक स्वभाव वाले, सम्यक प्रकार से जपने योग्य सम्पूर्ण अविद्या को ग्रसने वाले अथवा सब जगत को संहार करने वाले अथवा अतिथि आदिकों के साथ भोजन करने वाले ग्रहस्थ स्वरूप इसी प्रकार चार सोमादि का समान पान करने वाले, सब स्थानों में गमन शक्ति और सर्व क्रिया में कुशल, निहारादि रूप से गौर सदा मेघ रूप से विशेष काल में रात्रि और दिन वर्षा करने वाले।

पञ्चाब्दिश्च त्र्याब्दिश्चापि दित्यवाट् तुर्यवाट् तथा।
पृष्ठवाट् हेहतूनाथो द्युम्नवाजादि दायकः (३६)

पांच वर्ष वाली गौ, तीन वर्ष वाली गौ, दो वर्ष वाला बैल, साढ़े तीन वर्ष वाला बैल, चार वर्ष वाला बैल, गर्भ गिराने वाले गौ के स्वामी, सुवर्ण तथा अन्नादि के दाता।

आमीवत्को विचिन्वत्को देवानां हृदयाब्जगः।
आनिर्हतश्च विक्षीणो लोप्यश्चोलप्य एव च (३७)

चारों ओर स्थूल होता है या जम्भाई लेता है या व्याप्त होता है उसको आमीवत्क कहते हैं। अनुग्रह करने के लिए भक्तों को निग्रह करने के लिये अभक्तों को ढूंढने वाला विचिन्वत्क है, चारों ओर दुष्टों को हनन करने से अनाहत है देवताओं के हृदय कमल में निवास करने वाला है विशेष कर पापों को क्षीण करने वाला है, तृण से रहित ऊपर आदि स्थल नये तृण के सहित स्थान में होने वाला।

गुरुमाणः पर्णशद्यो सूर्म्य ऊर्व्यो भयस्तमः ।
शिवः शिवतमः शास्ता घोराघोरतनुद्वयः (३८)

क्रोध से अभक्तों पर हथियार उठाये हुये शुष्क एवं समूहों में होने वाले, सुन्दर प्रतिरूपा नदियों में होने वाले सुख रूप शिव रूप शासक घोर अघोर दो शरीर धारी ।

गिरिपर्वत नाथश्च शिपिविष्टः पतिः पशोः (३९)

गिरि पर्वत के स्वामी रश्मियों से घिरा सूर्य स्वरूप व्याष्टि समष्टि जीवों के प्रति ।

अप्रगल्भः प्रगल्भश्च मल्लानां नायकोत्तमः ।
प्रहितप्रमृशो दूतः क्षता स्यन्दनमध्यगः (४०)

अप्रगल्भ (ढिठाई से रहित) प्रगल्भ (ढिठ) मल्लों का उत्तम नेता, प्राणियों के हित करने के लिये भेजे हुये परामर्श में कुशलदूत रूप, रथ चलाने वाले सारथी, रथ के मध्य में प्राप्त

स्थपतिः ककुभश्चैव वन्यः कक्ष्यः पतञ्जलिः ।
सूतो हंसो निहन्ता च कपर्दी च पिनाकवान् (४१)

श्वेत ग्रामादि के स्वामी, श्रेष्ट या दिशारूप, वन में होने वाले. तृणों के समूह में होने वाले, सब प्राणियों से नमस्कार करने योग्य, सारथी रूप पौराणिक सत असत का विचारक परमात्मारूप, सबका संहारक, कपर्दी, पिनाक धारी ।

आयुधः स्वायुधश्चैव कृत्तिवासा जितेन्द्रियः ।
यातुधानी निहन्ता च कैलासे दक्षिणे स्थितः (४२)

आयुद्ध सुन्दर आयुध रूप, चर्म वस्त्र धारी, जितेन्द्रिय राक्षसी नाशक, काल हस्ती आदि दक्षिण कैलाश में स्थित।

सुवर्णमुखी तीरस्थो वृद्धाचल नितम्बगः।
मणिमुक्तामयोद्भासी काम्योऽकाम्यो महाद्रिधृक् (४३)

सुवर्ण मुखी नाशक नदी के तट पर कालहस्तीश्वर रूप से स्थित वृद्धा चल के नीचे के स्थान में प्राप्त, मणि मुक्ता मय हार से शोभित, शिव लिङ्ग में होने से काम्य आलिङ्ग होने से अकाम्य मेरु को दण्डधारी होने से महाद्रिधृक।

हृदय्यश्च निवेष्यश्च हरित्यः शुष्क्य एव च।
सिकत्यश्च प्रवाह्यश्च भवरुद्रादि नामवान् (४४)

हृदय में होने वाले, मोदक में होने वाले, नमे तृण शैवाल आदि में होने वाले, समित करीषादि में होने वाले, सिकता में होने वाले, बहने वाले जल में होने वाले, भवरुद्रादि नाम वाले।

भीमोऽभीमोऽपरिक्रान्तो विक्रान्तः सपराक्रमः।
शूरशूरः निहन्ता च मन्युमान्यन्यु नाशनः (४५)

अभक्तों को भयानक होने से भीम, भक्तों को सौम्य होने से अभीम, किसी से भी न पारित, स्वयं सब वस्तुओं से पार जाने वाला सबसे बलवान होने से सब का संहर्ता होने से सपराक्रम है। शूरों का शूर है सबका हनन करता है। क्रोध वाला और क्रोध नाशक है।

भामितो भामवान्भाम उक्षा चोक्षित रक्षकः ।
हविष्मान्मघवांश्चैव मखानां फलदायकः (४६)

अशास्त्र मार्गमें प्रवृत्त होने वालों पर सदा क्रुद्ध, क्योंकि प्रशामन के लिए क्रोधवान है। क्रोध स्वरूप है, धर्म वृष रूप है, मातृ कुक्षि में निषिक्त गर्भ का भोर मेघ से सिक्त सस्य आदि का रक्षक है। यजमान रूप से देवताओं को हवि देने से हविष्मान हवि के द्वारा पूज्य इन्द्रादि देवता रूप होने से मघवान (पूज्यवान) है। यज्ञ फल दाता है।

अघघ्नो दोषजालघ्नो व्याध्यामय विनाशनः ।
सुम्नरूपोऽसुम्नरूपो जगन्नाथोऽधिवाचकः (४७)

भक्तों के पापों का नाशक, दुर्व्यसन कुलक्षण आदि दोष जालों का नाशक, तत्काल प्राप्त रोग, दीर्घकाल से प्राप्त रोग का नाशक, धन रूप अभक्तों को दरिद्र रूप, जगत का स्वामी भक्तों अभक्तों के विवाद में भक्तों को ओधर करता है अर्थात् भक्तों का पक्षपाती है।

व्रातश्च व्रातनाथश्च व्रात्यो व्रात्यादि दूरगः ।
ब्रह्मदत्तश्चेकितानो देवदत्तोऽतिसम्मतः (४८)

नाना जातीय जनों का समूह रूप और उनका स्वामी असङ्ग निर्विकार चिद्रूप से संस्काररहित होने से प्राप्त है। संस्कार से रहित जनों से दूर भी है। ब्रह्मा के द्वारा मुनियों को दिये जाने से ब्रह्मदत्त है। उपासना से प्राण आत्मस्वरूप

होने अथवा श्रुतियें प्रसिद्ध मुनि चेकितान। सबका अधिष्ठान होने से जगत का निवास भूत या भव रोग का चिकित्सक देवताओं का दिया सबका अधिष्ठान रूप होने से अत्यन्त उपास्य रूप से सम्यत।

श्रमणोऽश्रमणः पुण्य आश्रमाणां फलप्रदः।
कालः कालयिता कालः कालकालो कलाधरः (४९)

नग्न ध्यान जप आदि श्रम में तत्पर परिव्राजक को श्रमण कहते हैं। उस रूप में विराजमान उनसे अन्य गृहस्थ वनस्थ आदि अश्रमण रूप हैं। कृष्ण वर्ण पड्भाव विकार से सबको परिणयनकर्त्ता। संवत्सरादि रूप मृत्युश्य संहर्त्ता, चन्द्रमा रूप।

धनुष्मानिपुमाश्चैव धन्वा विश्वाततावनः।
सत्यादि निरयाधारः काकुरः काकुवाग्बलः (५०)

धनुषबाणधारी, धनु रूप, संसार की विस्तीर्ण आयुधों से रक्षा करने वाला, सत्य आदि लोक से लेकर नरक लोक तक का आधार शोक भीत्यादि से प्रयुक्त ध्वनि रूप विकारवान कलभाषी बाल मुग्धादिकों का पालक।

राका काल विधाता च विश्वरक्षैक दक्षिणः।
अग्रवधो दूरवध्यः शन्तमश्च मयस्करः (५१)

पूर्णिमा रूप राका, सूर्य चन्द्रादि रूपसे काल का विधाता विश्वरक्षण में कुशल, अपने भक्तों को मारने की इच्छा करने वालों को आगे स्थित होकर ... ... हुए स्थित भी

भक्तों को हिन्सा की इच्छा करने वाले इसके वध योग्य हैं। सुख रूप, निरतिशय आनन्द स्वरूप है अतएव भक्तों को विचित्र सुख कर्ता है।

कालभारः कालकर्ता ऋचां भावैक वेदनः।
यजुषां सर्वमध्यस्थः साम्नां सारैकगोचरः (५२)

काल का धारण पोषणकर्त्ता, सब वेद के भाव का ज्ञाता, यजुर्वेद के मध्यस्थित, साम के सार उद्गीय का विष

अङ्गिराश्च तथा पूर्वाविद्यो ब्राह्मणमध्यगः।
मुक्तानां च गतिः पुण्यः पुण्यापुण्यहरो हरः (५३)

अङ्गों का रस भूत प्राण पूर्वाचार्यों द्वारा शिष्यों के लिए उपदेश योग्य, ब्राह्मणों के मध्य स्थित धर्मरूप और धर्म धर्म को हरने वाला हर रूप।

उक्थमुक्थकरश्चोक्थी ब्रह्मक्षत्रविडन्तिमः।
धर्मोऽधर्महरो धर्म्यो धर्मी धर्मपरायणः (५४)

शास्त्र विशेष को उक्थ कहते हैं। प्राणरूप से उक्थ करने वाला, उक्थ रूप शस्त्रवान, ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र रूप धर्म रूप, अधर्म हर्ता धर्म के अनुकूल, धर्म वाला, धर्म में तत्पर

नित्योऽनित्योऽक्षरः क्षान्तो वेगवानमिताशनः।
पुण्यवान् पुण्यकृत्पूतः पुरुहूतः पुरूष्टुतः (५५)

नित्य, अनित्य क्षय रहित, क्षान्तवान, वायु आदि रूप से वेगवान, सबका संहर्त्ता होने से बहुत खाने वाला, पुण्य

वाला पुण्यकर्त्ता, पवित्र, बहुत जनों द्वारा। स्तोत्र शास्त्र मन्त्र से स्तुति किया हुआ।

अर्चिष्मानर्चितः कुम्भः कीर्तिमान्कीर्तिदोऽकलः।
स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाभिधः (५६)

ज्योति वाला, पूजित, कुम्भ रूप, कीर्तिमान, कीर्तिदाता अवयव रहित, स्वाहा व षटकार रूप से देव यज्ञ में, हंकार रूप में मनुष्य यज्ञ में स्वधानाय से पितृ यज्ञ में विराजमान।

भूतकृद् भूतभृद्भर्ता द्विबर्हा द्वन्द्वनाशनः।
मुनिः पिता विराड् वीरो ब्रह्मा देवो दिनेश्वरः (५७)

भूतों का कर्त्ता भरण पोषण कर्त्ता, इस लोक और परलोक के सुख को बढ़ाने वाला, शीतोष्णादि द्वन्द नाशक, मननशील, रक्षक, सब स्थूल संसार रूप, शूर। ब्रह्मा देवता सूर्य रूप से विराजमान।

तारका तारकं तूर्णं तिग्मरश्मिस्त्रि नेत्रवान्।
तुल्यं तुल्यहरोऽतुल्यं त्रिलोकीनायकस्त्रुटिः (५८)

नक्षत्र रूप, प्राण रूप, अविलम्बित, तीव्र रश्मि वाला त्रिनेत्र, तुला के समान, तुल्य का हर्त्ता, जिसके समान कोई नहीं, तीनों लोक का स्वामी, सूक्ष्म काल रूप।

तर्त्ता तार्यं त्रिभुवनी तीर्णं तीरं च तीरणीः।
सतीरस्तीरगस्तीव्रं तीक्ष्णरूपी च तीव्रिमा (५९)

तरने वाला, तरने योग्य, त्रिभुवन रूप, तरा हुआ तीर,

तीर ले जाने वाला, तीर सहित, तीर में प्राप्त, तीव्रय तीक्ष्ण रूप, त्वरा वक्ता।

अर्थोऽनर्थः समर्थश्च तीर्थरूपी च तीर्थकः।
दायादो देयदाता च दायदः परिपूजितः (६०)

अर्थ अनर्थ समर्थ तीर्थ रूप और तीर्थक, पुत्रादि रूप देने योग्य का दाता रूप, धनादि का दाता, सर्व पूजित।

दायभुक् दायहन्ता च दामोदरगुणाम्बुधिः।
धनं धनदविश्रान्तो धनदो धननायकः (६१)

सज्जनों के दायका पालक, असज्जनों के दायका हन्ता दामोदर गुणों का समुद्र, धन रूप, धन दाता, कुबेर के पद्म शङ्खादि निधि रूप से विश्रान्त, धन दाता धन स्वामी।

निष्ठुरो नारशायी च नेता नायक उत्तमः।
नैको नैकचरो नाव्यो नारायणसमः प्रभुः (६२)

निष्ठुर रूप, नरों में सोने वाले, मार्ग दर्शक, स्वा॰ नाम रूप भेद से अनेक, बहुत से सेवकों के साथ विचरने वाला, नौका से तारने योग्य, नारायण के समान प्रभु रूप।

नूपुरं नूपुरी नेयं नरनारायणोत्तमौ।
पातालं पायिता पेयं पिबन्सागरपूर्णिमा (६३)

नूपुर रूप, नूपुर धारण कर्त्ता, प्राप्त होने योग्य परमपद नरनारायण स्वरूप, पाताल रूप देवताओं को अमृत पिलाने वाला, अमृत रूप देवतादि रूप से अमृत पीता हुआ, समुद्रों

को पूर्ण चन्द्र रूप के बढ़ाने वाला।

पूर्यं पूर्णं पूर्णिमा च पुण्यमानस लालितः।
पेपीयमानः पापघ्नः पञ्चयज्ञमयः पुरुः (६४)

जगत का आदि होने से पूर्ण है, परिच्छेद से रहित होने से पूर्ण है, पूर्णमासी रूप है, पवित्र मन वालों के मन में पूजित है; कृष्ण पक्ष में देवताओं द्वारा पान करने से चन्द्र रूप है। पाप का नाशक, पञ्च यज्ञ रूप बहुरूप है।

परमात्मा परेशानः पावनात्मा परात्परः।
पञ्चबुद्धिमयः पञ्चप्रयाजादि मयः परः (६५)

परमात्मा, परेशान रूप, पावन रूप, पर से परे पाँच ज्ञान रूप, इडा से लेकर स्वाहाकार तक पाँच प्रयाज रूप है।

प्राणभृत्प्राणहा प्राणः प्राणहृत्प्राणचेष्टितः।
पञ्चभूतमयः पञ्चकरणाश्चोपबृंहितः (६६)

प्राण का धारण हरण कर्त्ता प्राण रूप प्राण में चेष्टाकर्ता पञ्चभूत रूप, पञ्च इन्द्रिय रूप घोड़ों से बढ़ा हुआ।

प्रेयान्प्रेमतमः प्रेयः प्रेयसी प्रेयसीरतः।
पुरुपार्थः पुण्यशीलः पुरुषः पुरुषोत्तमः (६७)

प्रेयतर निरति शय प्रेम रूप, योग्य पदार्थ, भार्यादि उनमे आसक्त धर्मादि पुरुषार्थरूप पुण्यशील पुरुष, पुरुषोत्तम।

फलं फलस्य दाता च फलानामुत्तमोत्तमः।
बिम्बं बिम्बात्मकं बिम्बी बिम्बिनी मानसोल्लसः (६८)

फल रूप, फल का दाता, फलों में उत्तमों से उत्तम, सूर्य चन्द्रादि बिम्ब रूप, ज्योति रूप, उनका अधिष्टात, पुरुष रूप, उसकी प्रकाशिका चिति रूप, सदा सबके मानस में साक्षि प्रतिबिम्ब आदि भाव से विराजमान रहता है।

बधिरोऽबधिरो बालो बाल्यवस्थो बलप्रियः।
एकोऽद्वयी दशबलः पञ्चकी चाष्टकी पुमान् (६९)

श्रोत्रादि इन्द्रियों के अभाव से बीधर, सर्व शब्दग्राही होने से अबधिर, देह के धर्म वाला रोप से बाल हैं। बाल्यावस्था से युक्त, बल, बलराम प्रिय है। जिसको वह बल प्रिय है। सब शरीरों में एक आत्मा अतयव अद्वैन है। दश प्रकार का प्राण बल है। जिसका पञ्च भूत वाला अष्टपुरी वाला होने से अष्टकी है।

भगश्च भगवान्भल्गुर्भाग्यं भल्लश्च मण्डितः।
भर्वांश्च भावदायादो भवो भूरादि दैवतम् (७०)

भगरूप, भगवाला, संवरणकर्त्ता भाग्य रूप, विशेपणरूप सुखित रूप, प्रकाश रूप, रस का दाता भव, शिवरूप और जगत रूप, भूलोकादि का उपास्य।

भवानी भवविद्वेपो भूतनित्य प्रचारितः।
भापा भापयिता भाप्यं भावकृद्भाव्यवित्तमः (७१)

भव की पत्नी भवानी रूप, संसार से द्वेश कर्त्ता महा भूतों या प्राणियों या प्रमयो से नित्य व्यवहार में किया गया। संस्कृत वाणी रूप, सबको भापण कराने वाला, भाष्य रूप,

मानम विकार का कर्त्ता भाष्य जानने वालों में सबसे श्रेष्ठ।

मन्दो मलिनविच्छ्रेष्ठो माली माला मरुद्गरुत्।
मूर्तिमानपुनर्वेद्यो मुनिवृन्दो मुनीश्वरः (७२)

शनैश्चर रुप, दुष्ट चित्त इन्द्रियादि के ज्ञाताओं में श्रेष्ठ पवन रूप, सब आकाशगामियों का गमन में कारण होने से पक्ष है। माला व माली रुप है, मूर्ति रुप, एक बार ज्ञान होने पर काया निवृत होने से अपुनर्वेद है। अर्थात पुनः जानने योग्य नहीं।

मरुर्मरुजलं मेरुर्मरुद्गणनिषेवितः।
मर्यादास्थापनाध्यक्षो मर्यादा प्रविभञ्जनः (७३)

जगत रुप मृग तृष्णा के कल्पना का अधिष्ठाता होने से मरु है। जगत रुप से मरु का जल भी है। सब देवताओं का आश्रय होने से मेरु है। मरुत गणों से सेवित है। जगत की मर्यादा स्थापन में अध्यक्ष है। कलिकालादि में वेद की मर्यादा का नाशक या असत मर्यादा का नाशक है।

मान्यो मानयिताऽमान्यो मानदो मानगोचरः।
यास्को युवा यौवनाढ्यो युवतीभिः पुरस्कृतः (७४)

मान से योग्य, मानकर्त्ता मान्य रहित, मान दाता श्रुति आदि मान का विषय, विसक्तकर्ता यास्क रुप यौवन से सम्पन्न युवारुप, अतयत्र युवतियों से पुरुस्कृत।

वामनीर्भामनीश्चैव भारूपो भास्करद्युतिः।

संयद्वामो महावामः सिद्धिः संसिद्धिकल्पनः (७५)

प्राणियों के फल का प्रापक, सूर्यादि के तेज का प्रापक उक्त लक्षण प्रमाण जिसमें अच्छी प्रकार से प्राप्त होती है। अश्वमेधादि के महाफल जिसके द्वारा प्राप्त होते हैं। समस्त अणिमादिक सिद्धि रुप, सब वस्तुओं के स्वभाव का कल्पक।

सिद्धसङ्कल्प एणाङ्कस्त्वनूचानो महामनाः।
वामदेवो वसिष्ठश्च ज्येष्ठश्रेष्ठो महेश्वरः (७६)

सिद्ध संकल्प, मृगाङ्क चन्द्र व भगपाणि शिव गुरुकुल वास के नियम से साङ्ग वेदाध्ययनकर्ता महामन वाला, वामदेव, वशिष्ठ, ज्येष्ठ श्रेष्ठ महेश्वर रुप।

मन्त्री च वाणिजो दिव्यो भुवन्तिर्वारिवस्कृतः।
कार्यकारण सङ्घातो निदानं मूलकारणम् (७७)

मन्त्रों वाला, व्यापारी रुप, भूमि का विस्तार करने वाला, धन का कर्त्ता, अथवा सेवा करता कार्य कारण संघात रुप सबका कारण और मूल कारण।

अधिष्ठानं विश्वमाद्योऽविवर्त्तो ब्रह्म केवलम्।
अणिमा महिमा वेत्ता प्रथिमा पृथुलं पृथुः (७८)

जगत कल्पना का अधिष्ठान, जन्मादि परम्परा भ्रान्ति रुप भ्रम से रहित निरतिशयानन्द रुप से आद्य: सर्व विवर्त के बाध की सीमा, केवल ब्रह्म रुप, अणिमादि सिद्धि सबको जानने वाला, पृथु रुप, पृथुल, पृथु।

जीवो जैवः प्राणधर्त्ता करुणो मैत्रिको बुधः ।
ऋचां जलमृचां कर्त्ता ऋङ्मुखो रविमण्डलः (७९)

जीव जीव से सम्बन्धित, प्राण धारक, करुण रूप मित्रता करने वाला, बुद्ध वेद रूप, वेदकर्ता ऋङ्मुख रविमन्डल रूप ।

रूढोऽरूढी रूढिनिष्ठो रुरुक्ष् रूपवर्जितः ।
स्वरो हलश्च हल्यश्च स्पर्शश्चोष्मा तथाऽन्तरः (८०)

प्रसिद्धः रूढ़ि रहित, अकरादि अथवा उदात्तादि स्वरूप, हल रूप, हल ढोने वाला अथवा हल वाञ्जन उनमें होने वाला क से लेकर म तक स्पर्श है ।

विशोकश्च विमोहश्च यः स एव जगन्मयः ।
एकोऽनेकः परः पीड्यः शतार्द्धं च शतं बृहत् (८१)

शोक रहित, मोह रहित जो है वही जगन्मय है । परमार्थ में एक रूप, व्यवहार में अनेक रूप, परश्रेष्ठ रूप कर्म के अधीन दुःख के योग्य जीव, पचास, सौ महान रूप ।

सहस्रार्द्धं सहस्रं च इन्द्रगोपश्च पङ्कजम् ।
पद्मनाभः सुराध्यक्षः पद्मगर्भः प्रतापवान् (८२)

सहस्र का आधा सहस्र रूप, इन्द्र गोप के समान, कमल कमल नाम, देवताओं का स्वामी, पद्मगर्भ प्रतापवान ।

वासुदेवो जगन्मूर्त्तिः सन्धाता धातुरुत्तमः ।
हार्य्यं परमं गोप्यं गुह्यमव्यक्तनिस्मितम् (८३)

वासुदेव, जगत स्वरूप, संधान करने वाला धारणकर्ता उत्तम रहस्य रूप परम गोपनीय गुह्य अद्भुत से अद्भुत रूप।

आश्चर्यं मति गम्भीरं जगद्बुद्बुद सागरः।
संसार विषपीयूषं भववृश्चिकमान्त्रिकः (८४)

अति गम्भीर आश्चर्य रूप, संसार बुद्बुद के लिए समुद्र के समान, संसार रूप विष को दूर करने के लिए अमृत के समान, संसार रूप वृश्चिक को हटाने के लिए यांत्रिक के समान है।

भवगर्त समुद्धर्ता भवव्याघ्रच शङ्करः।
भवग्रह महामन्त्रो भवभूत विनाशनः (८५)

संसार रूप गर्त से उद्धार कर्ता, संसार रूप व्याघ्र को वश कर्ता, संसार ग्रह के लिए महा मन्त्र, संसार रूप भूत का विनाशक।

पद्ममित्रं पद्मबन्धुर्जगन्मित्रं जगद्गुरुः।
कविर्मनीषी परिभूर्याथातथ्य विधायकः (८६)

कमल का मित्र, कमल का बन्धु, जगत का मित्र, जगत का गुरू, क्रान्तदर्शी, मन का नियन्ता, सर्वत्र व्यापक, सब पदार्थों के स्वभाव का विधायक।

दूरस्थोऽप्यन्तिकस्थश्च शुभ्रो ऽकायं तथा व्रणम्।
कौपीतकीतत्वकारो नाना शाखा प्रवर्त्तकः (८७)

दूरस्थित होता हुआ समीप है। शुल्क रूप है, शरीर

तथा ऋण से रहित है। कौपति की तल्वकारादि नाना शाखाओं का प्रवर्तक है।

उद्गीथं परमौद्गात्रं शस्त्रं स्तोमं मखेश्वरः।
अश्वमेधः क्रतुच्छायः क्रतुः क्रतुमयोऽक्रतुः (८८)

उद्गीथ रूप साम उद्गाता का कर्म औद्गात्र रूप परम श्रेष्ठ, अप्रगति मन्त्रों से देवता की श्रुति शस्त्र प्रस्तोता का कर्म है, स्तुति पर कमन्त्र सङ्ग को स्तोम कहते हैं। यज्ञ का ईश्वर क्रतु में श्रेष्ठ संकल्प से रहित, यज्ञ रूप यज्ञमय।

पृषदाज्यं वसन्ताज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।
ब्रह्मतातो विराड्तातो मनुतातो जगत्ततः (८९)

दीध विन्दु मिश्रित आज्य को पृष्यदाज कहते हैं। श्रुति में वसन्त ऋतु को आज्य कहा है। ग्रीष्म इध्म है। शरद हवि है, ब्रह्मा का पिता विराट का पिता, मनु का पिता, जगत रूप से विस्तीर्ण है।

सर्वतातः सर्वधर्त्ता जगद्बुध्नो जगन्निधिः।
जगद्वीचितरङ्गाणामाधारं परमं पदम् (९०)
जगत्कल्लोलपाथोधिर्जगदंकुरकन्दरः।
जगद्वल्लीमहाबीजं जगत्कन्दरमुद्गरः (९१)

सबका पिता, सबका धारक जगत का मूल, जगत का आश्रय, जगत के छोटे बड़े तरङ्गों का आधार परम परमपद रूप, जगत रूप कल्लोल का समुद्र, जगत रूप अँकुर का बीज

जगत रूप वल्ली का महाबीज, जगत के रहने के लिये गुफा के समान है भूमिका उद्धारक है।

सर्वोपनिषदां कन्दं मूलकन्दं मुकुन्दकः।
एकाम्रनायको धीमाञ्जम्बुकेशो महातटः (९२)

समस्त उपनिषद् विद्या का मूल है, जगत के मूल का अधिष्ठान होने से मूल कन्द है मुक्ति दाता है। एकाम्रतीर्थ का स्वामी है। यह तीर्थ कांञ्ची व उत्काल में प्रसिद्ध है। बुद्धिमान जम्बुकेश रूप महातट समुद्र वास्थान विशेष।

न्यग्रोधोदुम्बरोश्वतथः कूटस्थः स्थाणुरद्भुतः।
अतिगम्भीरमहिमा चित्रशक्तिर्विचित्रवान् (९३)

वट, गूलर, पीपल रूप निर्विकार रूप, निष्क्रिय आश्चर्य रूप, अति गम्भीर महिमा वाला विचित्र शक्ति और उसके कार्य्य वाला।

विस्मितं चित्रवैचित्र्यो मायावी माययाऽऽवृतः।
कपिञ्जलः पिञ्जरश्च चित्रकूटो महारथः (९४)

अपने आप ही अद्भुत रस को प्राप्त चित्र विचित्र संसार जिससे उत्पन्न होता है, क्योंकि माया का स्वामी है। माया से आवृत भी है, शबल वर्ण वाला, चित्रकूट पर्वत रूप अथवा विचित्र माया कपट आदि जिसके है, महारथी है।

जगन्मयाय दिव्याय देवाय परमात्मने।
जगन्मयाय जगते प्रतीचे ते नमो नमः (९५)

जगतमय, दिव्य स्वरूप, देवता रूप, परमात्मा रूप जगत ही जिसकी माया है। जगत रूप, प्रत्येक रूप तुमको नमस्कार है नमस्कार है।

जीवाय जीवरूपाय जीवकर्मैकसाक्षिणे।
जीवाजीवप्रभिन्नाय प्रतीचे ते नमो नमः (९६)

जीव अजीव रूप, जीव कर्म के एक साक्षी रूप, जीव अजीव रूपसे भिन्नरूप प्रत्येक रूपको नमस्कार है नमस्कार है।

कालाय कालकण्ठाय कालकण्ठाय तेजसे।
ओजसे भ्राजसे तस्मै यस्मै कस्मै नमो नमः (९७)

काल रूप काल का चलाने वाला नीलकण्ठ तेज स्वरूप ओज रूप शोभा रूप परोक्ष प्रसिद्ध जिज्ञासित को नमस्कार है नमस्कार है।

किरीटिने सुगदिने शङ्खिने चक्रिणे नमः।
शूलिने चन्द्रमूर्द्धे च वृषाय वृषवाहिने (९८)

मुकुट, सुन्दर गदा, शङ्ख चक्रधारी विष्णु रूप त्रिशूल चन्द्रधारी वृष (धर्म) रूप और वृष वाहन वाले शिव रूप को नमस्कार है।

हंसिने वेदिने तस्मै चतुर्वक्त्राय ब्रह्मणे।
नमो ऋचाय ब्राह्माय ब्रह्मणे परमेष्ठिने (९९)

हंस वाहन, वेद के ज्ञाता, चतुर्मुख, ब्रह्मरूप नमस्कार को प्रतिपादिका ऋचायें हैं जिसकी ब्रह्म का प्रतिपादक वेद

भाग रूप परमेष्ठी ब्रह्म को नमस्कार है।

लक्ष्मीपते ! धीपते ! त्वं पाहि नः पुरुषोत्तम ।
दिव्याय दिव्यपुरुष ! पावनायातिपावन (१००)

हे लक्ष्मी पति, हे धीपति, हे पुरुषोत्तम सुर्लोक निवासी सूर्य रूप के लिये उसमें स्थित पुरुष पवित्रों को भी पवित्र करने वाले हमारी रक्षा करो।

रामाय रामदेहाय पावनाय पवित्रिणे ।
यस्यकस्यस्वरूपाय जगद्रूपाय ते नमः (१)

रमणीय शरीर वाले राम पवित्र करने वाले पवित्र रूप जिस किसी रूप से प्रसिद्ध पारमार्थिक रूप जगत रूप तुमको नमस्कार है।

महादेवाय देवाय नमउक्तिं विधेम ते ।
सर्वेश्वराय सर्वाय अचिन्त्यविभवाय च (२)

महादेव सर्वेश्वर सर्व रूप अचिन्त्य ऐश्वर्य हे देव तुमको नम इस प्रकार विधान करता हूँ।

अविचिन्त्यमहिम्ने ते जगद्धात्रे नमो नमः ।
सहस्रकृत्वो भूयश्च वन्दनं परमात्मने (३)

अचिन्त्य महिमा वाले जगत के धाता परमात्मा तुमको सहस्रोंवार वन्दन है।

मङ्गलं जगतां नाथ ! नमनं विश्वपालक ।
आराधनं करिष्यामि तव नान्यस्य कस्यचित् (४)

मङ्गल रूप जगतके स्वामी विश्व रक्षक तुमको नमस्कार और आराधन करूँगा और किसी का नहीं।

प्राप्तये सर्वविद्यानां लब्धये सर्वसम्पदाम्।

इतीदं प्रणवस्याऽस्य नाम्नां साहस्रमीरितम् (५)

सब विद्या की प्राप्ति के लिए और सब प्रकार की सम्पत्ति प्राप्तिके लिए यह प्रणव सहस्र नामका कथन किया है।

कृतये सर्वयज्ञानां सन्ततेः पर्यवाप्तये।

लब्धये सर्वकामानां निग्रहानुग्रहौ कृते (६)

इतीदं प्रणवस्याऽस्य नाम्नां साहस्रमीरितम्।

लब्धये सर्वतपसां वेदानां पर्यवाप्तये (७)

सब कामनाओं की प्राप्ति के लिए सब यज्ञों के करने के लिए, सब सन्तान के लिए, सब तप और वेद के फल प्राप्ति के लिए इस प्रकार इस प्रणव के सहस्र नाम का कथन किया है।

ॐ ब्रह्मरूपाय शान्ताय समन्वेन सदोदिताय पूर्णाय चिद्विलाय ओंकाराय नमः॥

इति श्री स्कन्द पुराणे प्रणव कल्पे पञ्चमोऽध्यायः

॥-समाप्त-॥